तापमान
अधिकतम 35.5 डिग्री
न्यूनतम 21.0 डिग्री

हरिभूमि
रेवाड़ी भूमि

रोहतक, रविवार, 14 सितंबर 2025

11 श्रीमद् भागवत कथा में श्री कृष्ण-रुक्मणी विवाह का...

12 लंबे समय बाद सफाई अभियान से सुधरी...

खबर संक्षेप

पोक्सो एक्ट के तहत फरार आरोपी काबू

कोसली। पुलिस ने पोक्सो एक्ट के तहत केस दर्ज करने के बाद फरार आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने पीड़ित पक्ष की शिकायत के आधार पर आरोपी के खिलाफ 9 सितंबर को पोक्स एक्ट सहित कई धाराओं के तहत केस दर्ज किया था। नाबालिग का सरकारी अस्पताल में मेडिकल कराया गया था। पुलिस ने इस मामले में एक गांव निवासी भूदेव को गिरफ्तार कर लिया। उसे कोर्ट ने न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया है।

मारपीट मामलों में तीन आरोपी गिरफ्तार

रेवाड़ी। पुलिस ने मारपीट करने और जान से मारने की धमकी देने के मामलों में तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। जाटूसाना थाना पुलिस ने उपचाराधीन घायल के बयान पर 12 सितंबर को मारपीट करने और धमकी देने का केस दर्ज किया था। इस मामले में जांच के बाद चौकी नं. 2 निवासी मातादी और राजबाला को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने 12 सितंबर को टूमना निवासी विक्रांत को गिरफ्तार किया है। तीनों को पुलिस बेल पर छोड़ दिया गया।

सड़क हादसे का आरोपी चालक गिरफ्तार

रेवाड़ी। थाना रामपुरा पुलिस ने सड़क हादसे के बाद फरार एक कार चालक को गिरफ्तार किया है। रामपुरा के पास हुए कार की टक्कर से एक व्यक्ति घायल हो गया था। चालक मौके से फरार होने में कामयाब हो गया था। पुलिस ने 1 सितंबर को आरोपी के खिलाफ केस दर्ज किया था। जांच के बाद पुलिस ने इस मामले में कुतुबपुर निवासी विजय कुमार को गिरफ्तार कर लिया। उसकी वैगन-आर कार को भी कब्जे में लिया गया है। बाद में आरोपी को पुलिस बेल पर रिहा कर दिया गया।

सट्टा खाईवाली करने के आरोपी को किया काबू

रेवाड़ी। सिटी पुलिस ने शहर में सट्टा खाईवाली करने के मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस को सूचना मिली थी कि नई आबादी निवासी राजकुमार उर्फ राजू सार्वजनिक स्थान पर सट्टा खिला रहा है। सूचना मिलने के बाद पुलिस ने मौके पर जाकर आरोपी को काबू कर लिया। तलाशी लेने पर उसके पास से सट्टे की 3120 रुपये राशि और पर्चियां बरामद हुई।

राजगढ़ गांव से 11वीं का छात्र हुआ लापता

बावल। गांव राजगढ़ से 11वीं में पढ़ने वाला करीब 16 वर्षीय छात्र घर से लापता हो गया। पुलिस शिकायत में अर्जुन सिंह ने बताया कि उसका बेटा कार्तिक टांकड़ी के प्राइवेट स्कूल में पढ़ता है। शुक्रवार को शाम के समय घर से निकला था। इसके बाद वापस नहीं आया। रात को घर नहीं लौटने पर उसकी तलाश शुरू की गई, परंतु उसका कोई पता नहीं चल सका। बावल थाना पुलिस ने उसकी शिकायत पर केस दर्ज करने के बाद उसकी तलाश शुरू कर दी।

प्रशासन कर रहा कार्रवाई, दुकानदारों ने लगाया भेदभाव का आरोप

शहर में नासूर बन चुका अतिक्रमण चालान करने पर जताया कड़ा विरोध

अतिक्रमण से बिगड़ी शहर की व्यवस्था, बाजार व फुटपाथ पर दुकानों से ज्यादा सड़क पर रखा सामान, जाम की स्थिति भी बन रही

> **बाजारों में काफी दुकानदारों ने पक्का निर्माण करके अतिक्रमण किया हुआ है**

हरिभूमि न्यूज ⏭ रेवाड़ी

प्रशासन की ओर से शहर स्वच्छता अभियान के तहत सफाई के साथ बाजार व मुख्य मार्गो से अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई की जा रही है। इसके साथ ही सड़क पर कचरा फेंकने वालों व अतिक्रमणकारियों के चालान भी काटे जा रहे है। शनिवार को रेलवे स्टेशन के पास स्थित दुकानदारों ने प्रशासन पर अतिक्रमण हटाने व चालान काटने में भेदभाव का आरोप लगाते हुए अपनी दुकानें बंद करके विरोध जताया।

दुकानदार धमेन्द्र, विजय, अनिल व राजेश ने कहा कि प्रशासन की ओर से छोअे दुकानदारों के जबरदस्ती चालान काटे जा रहे है, जबकि अन्य बाजार में 15-15 फीट तक अतिक्रमण है। एक दुकानदार शटर तक बैठा है उसका नाजायज तरीके से चालान किया जा रहा है तथा तख्त उठाए जा रहे है, जबकि रेलवे रोड व अन्य बाजार में काफी दुकानदारों ने पक्का निर्माण करके अतिक्रमण किया हुआ है।

अतिक्रमण हटाने के भेदभाव में रेलवे चौक के पास बंद की गई दुकानें।

विधायक लक्ष्मण सिंह से मुलाकात करेंगे दुकानदार

शहर का कोई भी बाजार व मार्ग ऐसा नहीं है, जहां पर दुकानदारों व रेहड़ी वालों ने अतिक्रमण ने कर रखा हो। कभी नगर परिषद की टीम, कभी पुलिस छोटे दुकानदारों पर ही सामन हटाने की कार्रवाई कर रही है। दुकानदारों ने कहा कि इस भेदभाव को लेकर विधायक लक्ष्मण सिंह से मुलाकात करेंगे।

नगर परिषद की अतिक्रमण हटाने के नाम पर बार-बार बनाई गई सभी योजनाएं हो चुकी फेल

नगर परिषद की अतिक्रमण हटाने के नाम पर बार-बार बनाई गई सभी योजनाएं फेल हो चुकी है। वर्तमान में सरकुलर रोड सहित सभी बाजार पूरी तरह अतिक्रमण की गिरफ्त में है। टीमें गठित होने के बाद नगर परिषद के अधिकारी व कर्मचारी एक-दो दिन ही शहर का जायजा लेकर कुछ सामान जब्त करके व कुछ चालान काटकर सुस्त पड़ जाते है। यहां तक की टीम के कार्यालय से निकलते ही अतिक्रमणकारियों तक सूचना भी पहुंच जाती है। सूचना के बाद अतिक्रमणकारियों की ओर से सड़क पर रखा गया सामान अंदर रख लिया जाता है। शनिवार को रेलवे चौक के दुकानदारों ने प्रशासन पर अतिक्रमण हटाने में भेदभाव का आरोप भी लगाया है। प्रशासन की ओर से भी इस समस्या का समाधान करने में कोई ठोस कदम नहीं उठाए जा रहे है।

अतिक्रमण व अवैध पार्किंग से जाम

बाजार में दुकानों के आगे दुकानदारों ने पहले ही सामान रखकर अतिक्रमण किया हुआ है। इसके बाद सामान के आगे टू-व्हीलर खडे कर दिए जाते है, जिससे बाजार में जाम की स्थिति बन जाती है। जाम लगने से बाजार से पैदल भी निकलना भी मुश्किल हो रहा है। दुकानदारों व रेहड़ी वालों ने कब्जा करके बाजार की सड़कों सिकोड़ कर रख दिया है। इसके अलावा बाजार में आने वाले लोग रेलवे रोड पर अपने वाहन खड़े करके जाम की स्थिति पैदा करते है। सरकुलर रोड पर भी अवैध पार्किंग ने यातायात व्यवस्था बिगाड़ कर रख दी है। सड़कों पर अवैध पार्किंग में खड़े वाहनों के कारण जाम की स्थिति बन रही है।

जाम लगने से बाजार से पैदल भी निकलना भी मुश्किल

बाजार में दुकानों के आगे दुकानदारों ने पहले ही सामान रखकर अतिक्रमण किया हुआ है। इसके बाद सामान के आगे टू-व्हीलर खडे कर दिए जाते है, जिससे बाजार में जाम की स्थिति बन जाती है। जाम लगने से बाजार से पैदल भी निकलना भी मुश्किल हो रहा है। दुकानदारों व रेहड़ी वालों ने कब्जा करके बाजार की सड़कों सिकोड़ कर रख दिया है। इसके अलावा बाजार में आने वाले लोग रेलवे रोड पर अपने वाहन खड़े करके जाम की स्थिति पैदा करते है। सरकुलर रोड पर भी अवैध पार्किंग ने यातायात व्यवस्था बिगाड़ कर रख दी है। सड़कों पर अवैध पार्किंग में खड़े वाहनों के कारण जाम की स्थिति बन रही है।

दुकानें बंद करके बाहर खड़े दुकानदारों को समझाती पुलिस।

दुकानें बंद होने पर चर्चा करते लोग

राज्य स्तरीय टीटी प्रतियोगिता में रेवाड़ी को मिला दूसरा स्थान

रेवाड़ी। स्कूल गेम फेडरेशन ऑफ इंडिया की ओर से फतेहाबाद में आयोजित तीन दिवसीय राज्य स्तरीय टेबल टेनिस प्रतियोगिता में रेवाड़ी की टीम ने 19 वर्षीय आयु वर्ग में द्वितीय स्थान हासिल कर राज्य भर में जिले का गौरव बढ़ाया है। यह प्रतियोगिता 8 से 10 सितम्बर को आयोजित की गई थी। टीम के सभी खिलाड़ियों का शनिवार को दिल्ली रोड स्थित सतीश स्कूल की अकादमी में स्वागत किया गया। अकादमी कोच सनी कुमार और राव तुलाराम स्टेडियम के टेबल टेनिस कोच प्रमोद यादव ने खिलाड़ियों का सम्मान किया। खिलाड़ियों का अगला लक्ष्य राष्ट्रीय स्तर पर पहुंचने का होना चाहिए। प्रतियोगिता में पुलकित, अंकित, रक्षित, गौरव व वासु ने उपलब्धि हासिल की। प्रतियोगिता में लक्ष्मी, तुलसी, महेश, सौम्य व हर्षित ने भी उल्लेखनीय प्रदर्शन किया। इस मौके पर सतीश स्कूल की प्राचार्या संगीता यादव, जैन पब्लिक स्कूल की कोच रजनी गुप्ता व कोच नितेश कुमार भी मौजूद थे।

एसडीएम विजय कुमार यादव ने दिए निर्देश

सुरक्षित स्कूल वाहन पॉलिसी का पालन करें सभी स्कूल संचालक

हरिभूमि न्यूज ⏭ कोसली

एसडीएम विजय कुमार यादव ने कहा कि सभी स्कूल संचालक सुरक्षा वाहन पालिसी का अनुपालन करें। प्राइवेट स्कूलों की बसों और वैन में सीसीटीवी कैमरा लगा होना चाहिए, जिनकी रिकार्डिंग कम से कम तीन माह तक रखी जाए। एसडीएम ने शनिवार को निजी स्कूल संचालकों की बैठक ली। एसडीएम ने कहा कि उन्होंने स्वयं सीसीटीवी कैमरे चेक किए थे, जिसमें कुछ कैमरे बंद पड़े थे। कुछ स्कूल बसों में सीसीटीवी ही नहीं थे, जबकि सीसीटीवी रिकार्डिंग को तीन महीने तक सेफ रखा जाता है।

चालकों के लाइसेंस जरूरी

एसडीएम ने कहा कि प्राइवेट स्कूल बसों के चालकों के पास ड्राइविंग लाइसेंस होना आवश्यक है। उनकी आंखों की जांच होती रहनी चाहिए। बस से लड़कियां जा रही हैं तो एक लेडी कंडक्टर होनी चाहिए। बस की स्पीड को लिमिट में रखें। अभिभावक ने शिकायत की तो फौरन कार्रवाई की जाएगी। इस अवसर पर खंड शिक्षा अधिकारी राजेंद्र यादव ने भी स्कूल वाहन पॉलिसी के बारे में जानकारी दी।

सनग्लो स्कूल के छात्र अंकित का राष्ट्रीय स्तर पर टेबल टेनिस में चयन

रेवाड़ी। सनग्लो इंटरनेशनल स्कूल के छात्र अंकित सांसवाल का राष्ट्रीय स्तर पर टेबल टेनिस में चयन हुआ है। खेल प्रतियोगिता फतेहाबाद में आयोजित की गई, जिसमें अंकित ने जिला स्तर पर दूसरा स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिता में विभिन्न स्कूलों ने हिस्सा लिया। स्कूल प्रबंधन कमेटी ने अंकित की सराहना की। विद्यालय के अध्यक्ष डा. वीपी यादव, निदेशिका शारदा यादव व प्राचार्य गरिमा राव ने विद्यार्थियों को बधाई देते हुए उनके उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। उन्होंने कोच राहुल कुमार की भी सराहना की।

स्कूलों में बच्चों को मिड ब्रेन का दिया जा रहा ज्ञान

> यह देखकर शिक्षक व ग्रामीण हैरान रह गए

हरिभूमि न्यूज ⏭ कोसली

कोसली के गांव कान्हड़वास स्थित राजकीय प्राथमिक विद्यालय में विद्यार्थियों को ज्ञान देने के लिए एक नया और अनोखा प्रयोग शुरू किया गया है। बच्चों को मिड ब्रेन यानी तीसरी आंख का ज्ञान दिया जा रहा है। इस ज्ञान के माध्यम से बच्चे बिना आंखों से देखे हुए भी चीजों को पहचानने और सवालों के जवाब देने में सक्षम हो रहे हैं। विद्यालय के हेड मास्टर भूपसिंह ने बताया कि मिड ब्रेन शिक्षा बच्चों के दिमागी विकास की एक विशेष तकनीक है। इसके अभ्यास से विद्यार्थी अपनी मानसिक क्षमता का विस्तार कर सकते हैं और सामान्य दृष्टि के बिना भी आसपास की वस्तुओं और परिस्थितियों को समझने की क्षमता विकसित कर सकते हैं।

रेवाड़ी। आंखों पर पट्टी बांध कर सवालों का उत्तर दे रही एक छात्रा व छात्र।

तकनीक मील का पत्थर

उन्होंने बताया कि इस प्रयोग को विद्यालय के बच्चों में सकारात्मक प्रतिक्रिया मिल रही है। इस तकनीक का ज्ञान ले रहे कुछ विद्यार्थियों से जब सवाल पूछे गए तो उसने बिना देखे ही सभी के उत्तर बड़ी सहजता से दिए। यह देखकर मौजूद शिक्षक और ग्रामीण हैरान रह गए। गांव के लोग भी इस नई शिक्षा पद्धति में गहरी रुचि दिखा रहे हैं और उम्मीद जता रहे हैं कि यदि इस तरह के प्रयोग सफल रहे तो भविष्य में ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों के सर्वांगीण विकास में यह तकनीक मील का पत्थर साबित हो सकती है।

इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय मीरपुर का 13वां स्थापना दिवस

रेवाड़ी। इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय मीरपुर में शनिवार को विश्वविद्यालय के 13वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में नव प्रवेशित विद्यार्थियों के लिए प्रेरक दीक्षा आरंभ कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान हरियाणवी डांस पेश करतीं छात्राएं।

बावल पुलिस ने बाइक सहित आरोपी को किया गिरफ्तार

> **पुलिस ने आरोपी को कोर्ट में पेश किया जहां से उसे न्यायिक हिरासत में भेज दिया**

हरिभूमि न्यूज ⏭ रेवाड़ी

बावल थाना पुलिस ने बाइक चोरी करने के मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार किए गए आरोपी की पहचान गांव ढोकिया निवासी रिंकू उर्फ रघु के रूप में हुई है। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से चोरी की गई बाइक को बरामद कर लिया है। गांव भगवानपुर निवासी सुरेश कुमार हलवाई का काम करता है। गत 13 अप्रैल को वह गांव सुबासेहडी में रामेश्वर के मकान पर लगन के कार्यक्रम में गया था तथा अपनी बाइक को मकान के बाहर खडी की थी, जिसे कोई व्यक्ति चोरी करके ले गया। पुलिस ने शुक्रवार को मामले में संलिप्त एक आरोपी गांव ढोकिया निवासी रिंकू उर्फ रघु को बाइक सहित गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने आरोपी को कोर्ट में पेश किया जहां से उसे न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया है।

रेवाड़ी। पुलिस गिरफ्त में बाइक चोरी का आरोपी। फोटो : हरिभूमि

मुहिम रेवाड़ी, बावल व कोसली न्यायिक परिसर में कार्यक्रम आयोजित, 9.41 करोड़ की राशि का हुआ समझौता

राष्ट्रीय लोक अदालत में 8745 मामलों का निपटारा

> **सीजेएम अमित वर्मा ने सभी नागरिकों एवं न्यायिक अधिकारियों का आभार जताया**

हरिभूमि न्यूज ⏭ रेवाड़ी

हरियाणा राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण पंचकूला के निर्देशानुसार, जिला एवं सत्र न्यायाधीश गुरविंदर सिंह वाधवा के संरक्षण तथा अमित वर्मा मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी एवं सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की देखरेख में शनिवार को जिला न्यायालय रेवाड़ी, उपमंडल न्यायालय बावल तथा उपमंडल न्यायालय कोसली में तीसरी राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया गया। लोक अदालत के माध्यम से कुल 8745 मामलों का आपसी सहमति से निपटारा किया गया, जिनमें नौ करोड़ इकतालीस लाख इकतीस हजार पांच सौ पचानवे रुपये की राशि का आपसी समझौते द्वारा निपटारा किया गया।

रेवाड़ी में आयोजित लोक अदालत की बेंचों की अध्यक्षता मिस अंकिता शर्मा अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश, अरविन्द नाशिएर प्रिंसिपल जज परिवार न्यायालय, मिस जोगिन्दरी सिविल न्यायाधीश वरिष्ठ खंड सह अतिरिक्त मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी, आकाश सरोहा और आदित्य सैनी सिविल जज जूनियर डिविजन सह न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी ने की। उपमंडल न्यायालय बावल में आलोक आनंद अतिरिक्त सिविल न्यायाधीश वरिष्ठ खंड सह उपमंडल न्यायिक दंडाधिकारी और उपमंडल न्यायालय कोसली में मिस निशा सिविल जज जूनियर डिविजन सह न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी की अध्यक्षता में बेंचों ने कार्य किया। लोक अदालत में चेक बाउंस, दीवानी, मोटर वाहन अधिनियम, बैंक रिकवरी व पारिवारिक विवाद सहित विभिन्न प्रकार के मामलों का मौके पर निपटारा किया गया।

रेवाड़ी। रेवाड़ी कोर्ट परिसर में मामलों का निपटारा करते जज।

रेवाड़ी। बावल कोर्ट परिसर में मामलों का निपटारा करते जज।

ऐसे आयोजनों के प्रति सक्रिय भागीदारी जरूरी

सीजेएम अमित वर्मा ने लोक अदालत में भाग लेने वाले सभी नागरिकों एवं न्यायिक अधिकारियों का आभार व्यक्त किया और भविष्य में भी ऐसे आयोजनों के प्रति नागरिकों की सक्रिय भागीदारी की अपेक्षा जताई।

फ्लेक्सी कैप, मिड कैप और लार्ज कैप फंड्स में बढ़ा निवेश

■ इक्विटी फंड्स का नेट इनफ्लो 22% तक घटा ■ एएमएफआई ने अगस्त 2025 के आंकड़े जारी किए ■ अगस्त 2025 इक्विटी म्यूचुअल फंड्स के लिए मिला-जुला महीना रहा

बिजनेस डेस्क

एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया (एएमएफआई) ने अगस्त 2025 के निवेश और रिडेम्प्शन के लेटेस्ट आंकड़े जारी कर दिए हैं। ये आंकड़े म्यूचुअल फंड इंडस्ट्री के ताजा रुझानों की दिलचस्प तस्वीर पेश करते हैं। अगस्त 2025 में निवेशकों ने जहां एक ओर इक्विटी फंड्स में लगातार पैसे डाले हैं, वहीं डेट फंड्स से बड़े पैमाने पर पैसे निकाले गए हैं। आंकड़ों के मुताबिक अगस्त 2025 इक्विटी म्यूचुअल फंड्स के लिए मिला-जुला महीना रहा। कुल नेट इनफ्लो 33,430 करोड़ रुपये रहा, जो जुलाई 2025 के 42,702 करोड़ रुपये की तुलना में करीब 22% कम है। हालांकि यह गिरावट दिखाती है कि निवेशक थोड़े सावधान हो गए हैं, लेकिन यह भी सच है कि यह लगातार 54वां महीना है जब इक्विटी फंड्स में नेट इनफ्लो देखने को मिला।

फ्लेक्सी, मिड और लार्ज कैप में इनफ्लो बढ़ा

अगस्त में सबसे ज्यादा निवेश फ्लेक्सी कैप फंड्स में आया। इस कैटेगरी में 7,679 करोड़ रुपये का नेट इनफ्लो दर्ज हुआ, जो जुलाई के 7,654.33 करोड़ रुपये के नेट-इनफ्लो के मुकाबले थोड़ा बेहतर रहा। मिड कैप फंड्स में भी 5,330 करोड़ रुपये का इनफ्लो रहा, जबकि जुलाई में यह 5,182 करोड़ रुपये था। दिलचस्प बात यह रही कि लार्ज कैप फंड्स में 2,835 करोड़ रुपये का नेट निवेश आया, जो जुलाई के 2,125 करोड़ रुपये से 33% ज्यादा रहा। हालांकि, स्मॉल कैप फंड्स में निवेश की रफ्तार थोड़ी धीमी पड़ी और इसमें नेट इनफ्लो जुलाई के 6,484 करोड़ रुपये से घटकर अगस्त में 4,993 करोड़ रुपये रह गया।

डेट फंड्स में निकासी का दबाव

अगस्त 2025 में डेट म्यूचुअल फंड्स ने बड़ा झटका खाया। कुल मिलाकर इस कैटेगरी से 7,980 करोड़ रुपये का नेट आउटफ्लो हुआ। यह तब है जब जुलाई 2025 में इन्हीं फंड्स में 1.07 लाख करोड़ रुपये का नेट इनफ्लो दर्ज हुआ था। कई सब-कैटेगरी जैसे कॉरपोरेट बॉन्ड फंड्स, बैंकिंग एवं पीएसयू फंड्स और गिल्ट फंड्स से पैसे निकाले गए। इसका बड़ा कारण कॉर्पोरेट्स और संस्थागत निवेशकों की तरफ से मनी मार्केट और लिक्विड फंड्स से निकासी बताई जा रही है, जो आमतौर पर तिमाही खत्म होने के बाद होती है।

हाइब्रिड फंड्स का आकर्षण बरकरार

हाइब्रिड फंड्स में निवेशकों का भरोसा जारी रहा। अगस्त में इसमें 15,294 करोड़ रुपये का नेट इनफ्लो दर्ज हुआ। हालांकि यह जुलाई के 20,879 करोड़ रुपये से कम है, लेकिन फिर भी इससे संकेत मिलता है कि निवेशक बैलेंस्ड और डायनैमिक स्ट्रेटजी वाले फंड्स को पसंद कर रहे हैं।

गोल्ड ईटीएफ और इंडेक्स फंड्स रहे फेवरिट

गोल्ड ईटीएफ अगस्त में निवेशकों के बीच काफी पॉपुलर रहे. इनमें 2,190 करोड़ रुपये का नेट इनफ्लो आया, जो जुलाई के 1,256 करोड़ रुपये की तुलना में करीब 74% ज्यादा है. इससे यह भी पता चलता है कि सोने की कीमतों में लगातार मजबूती और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मौजूदा चुनौतियों के कारण निवेशक गोल्ड को सुरक्षित ऑप्शन मान रहे हैं। इंडेक्स फंड्स और अन्य ईटीएफ का आकर्षण भी बरकरार है। अगस्त में इंडेक्स फंड्स का एयूएम करीब 3.04 लाख करोड़ रुपये और नेट इनफ्लो 1,503 करोड़ रुपये रहा, जबकि अन्य ईटीएफ का एयूएम करीब 8.42 लाख करोड़ रुपये और नेट इनफ्लो 7,244 करोड़ रुपये रहा।

एनएफओ कलेक्शन में भारी गिरावट

जुलाई में म्यूचुअल फंड्स की 30 नई स्कीम्स या न्यू फंड ऑफर (एनएफओ) लॉन्च हुए थे और उनके जरिये 30,416 करोड़ रुपये जुटाए गए थे। लेकिन अगस्त में एनएफओ की संख्या घटकर 23 और जुटाई गई रकम सिर्फ 2,859 करोड़ रुपये रह गई।

फोलियो नए रिकॉर्ड पर, कुल एयूएम घटा

इंडस्ट्री का कुल एयूएम अगस्त में 75.19 लाख करोड़ रुपये रहा, जो जुलाई के 75.36 लाख करोड़ रुपये से मामूली रूप से कम है, लेकिन इस दौरान फोलियो की कुल संख्या बढ़कर 24.89 करोड़ हो गई। जुलाई में यह संख्या 24.57 करोड़ थी। यानी निवेशकों के लगभग 32 लाख नए खाते जुड़े, जो यह दिखाता है कि छोटे निवेशक लगातार इस इंडस्ट्री का हिस्सा बन रहे हैं। अगस्त 2025 का महीना इस लिहाज से अहम रहा कि इक्विटी फंड्स में पैसे आते रहे, लेकिन रफ्तार धीमी हुई। फ्लेक्सी कैप, मिड कैप और लार्ज कैप फंड्स में निवेशकों का भरोसा दिखा, जबकि स्मॉल कैप में सावधानी दिखी। दूसरी ओर, डेट फंड्स ने करारा झटका खाया. हाइब्रिड फंड्स और गोल्ड ईटीएफ निवेशकों को आकर्षित करते रहे।

निवेश का जैकपॉट : कुछ इक्विटी फंड्स ने 10 साल में दिया 533 से 678% तक रिटर्न

लंबी अवधि का मानक 10 साल मानें तो कई इक्विटी म्यूचुअल फंड सबसे बेहतर

सात फंड ऐसे हैं, जिनमें 20% सालाना से अधिक रिटर्न निवेशकों को मिला

इन फंड्स को खरीदने वाले निवेशक भी मालामाल, जमकर किया निवेश

बिजनेस डेस्क

अगर आप भी निवेशक हैं या निवेश करने जा रहे हैं तो एक बार बाजार के बारे में रिसर्च जरूर कर लें। इससे आपको निवेश में आसानी रहेगी और पैसे का नुकसान नहीं होगा। बाजार में पैसा लगाने से पहले अपनी रिस्क क्षमता और लक्ष्य को जान लें। इसके बाद निवेश करेंगे जो मुनाफे में ही रहेंगे। म्यूचुअल फंड में निवेश करने जा रहे हैं तो हमेशा लंबी अवधि का लक्ष्य लेकर चलें। म्यूचुअल फंड लंबी अवधि के निवेश के लिए सबसे अच्छे विकल्पों में एक माने जाते हैं। निवेश की अवधि जितना अधिक होगी, कंपाउंडिंग का उतना ज्यादा फायदा मिलेगा। लंबी अवधि का मानक 10 साल मानें तो कई इक्विटी म्यूचुअल फंड स्कीम निवेशकों के लिए जैकपॉट साबित हुई हैं। इनमें से 7 फंड तो ऐसे हैं, जिनमें 20 फीसदी सालाना से अधिक रिटर्न मिला है। इनका 10 साल में एबसॉल्यूट रिटर्न 533 से 678 फीसदी रहा है। इसका मतलब है कि इन्होंने इस अवधि में निवेशकों का पैसा 6 से 7.5 गुना बढ़ा दिया। हमने इस रिपोर्ट में ईटीएफ को शामिल नहीं किया है।

म्यूचुअल फंड में निवेश करने जा रहे हैं तो हमेशा लंबी अवधि का लक्ष्य लेकर चलें

•

बाजार में पैसा लगाने से पहले अपनी रिस्क क्षमता और लक्ष्य को पहचान लें

निप्पॉन इंडिया स्मॉल कैप फंड

- 5 साल का रिटर्न : 22.78% सालाना
- 1 लाख निवेश की वैल्यू : 7,78,532 रुपये (7.79 लाख)
- रेटिंग : 5 स्टार
- कुल एसेट्स : 64,821 करोड़ रुपये (31 अगस्त, 2025)
- एक्सपेंस रेश्यो : 0.64% (31 अगस्त, 2025)

क्वांट ईएलएसएस टैक्स सेवर फंड

- 5 साल का रिटर्न : 21.86% सालाना
- 1 लाख निवेश की वैल्यू : 7,22,124 रुपये (7.22 लाख)
- रेटिंग : 3 स्टार
- कुल एसेट्स : 11,396 करोड़ रुपये (31 अगस्त, 2025)
- एक्सपेंस रेश्यो : 0.58% (31 अगस्त, 2025)

एचडीएफसी स्मॉल कैप फंड

- 5 साल का रिटर्न : 20.47% सालाना
- लाख निवेश की वैल्यू : 6,43,857 रुपये (6.44 लाख)
- रेटिंग : 4 स्टार
- कुल एसेट्स : 36,294 करोड़ रुपये (31 अगस्त, 2025)
- एक्सपेंस रेश्यो : 0.69% (31 अगस्त, 2025)

एक्सिस स्मॉल कैप फंड

- 5 साल का रिटर्न : 20.46% सालाना
- 1 लाख निवेश की वैल्यू : 6,43,622 रुपये (6.43 लाख)
- रेटिंग : 3 स्टार
- कुल एसेट्स : 25,569 करोड़ रुपये (31 अगस्त, 2025)
- एक्सपेंस रेश्यो : 0.57% (31 अगस्त, 2025)

इन्वेस्को इंडिया मिड कैप फंड

- 5 साल का रिटर्न : 20.39% सालाना
- 1 लाख निवेश की वैल्यू : 6,39,594 रुपये (6.40 लाख)
- रेटिंग : 4 स्टार
- कुल एसेट्स : 8,063 करोड़ रुपये (31 अगस्त, 2025)
- एक्सपेंस रेश्यो : 0.56% (31 अगस्त, 2025)

एसबीआई स्मॉल कैप फंड

- 5 साल का रिटर्न : 20.30% सालाना
- 1 लाख निवेश की वैल्यू : 6,34,828 रुपये (6.35 लाख)
- रेटिंग : 3 स्टार
- कुल एसेट्स : 35562.96 करोड़ रुपये (31 अगस्त, 2025)
- एक्सपेंस रेश्यो : 0.73% (31 अगस्त, 2025)

क्वांट स्मॉल कैप फंड

- 5 साल का रिटर्न : 20.25% सालाना
- 1 लाख निवेश की वैल्यू : 6,32,195 रुपये (6.32 लाख)
- रेटिंग : 4 स्टार
- कुल एसेट्स : 28,758 करोड़ रुपये (31 अगस्त, 2025)
- एक्सपेंस रेश्यो : 0.72% (31 अगस्त, 2025)

क्या हैं इक्विटी फंड

इक्विटी फंड एक प्रकार का म्यूचुअल फंड है जो मुख्य रूप से शेयर बाजार में निवेश करता है। इसका उद्देश्य निवेशकों को शेयर बाजार में निवेश करने का अवसर प्रदान करना है, जिससे वे अपने निवेश पर अच्छा रिटर्न प्राप्त कर सकें।

इक्विटी फंड के प्रकार

1. लार्ज-कैप फंड: ये फंड बड़े कैप शेयरों में निवेश करते हैं, जो आमतौर पर अच्छी तरह से स्थापित कंपनियों के शेयर होते हैं।
2. मिड-कैप फंड: ये फंड मध्यम आकार की कंपनियों के शेयरों में निवेश करते हैं, जो आमतौर पर तेजी से बढ़ने वाली कंपनियां होती हैं।
3. स्मॉल-कैप फंड: ये फंड छोटी कंपनियों के शेयरों में निवेश करते हैं, जो आमतौर पर उच्च जोखिम और उच्च रिटर्न की संभावना के साथ आते हैं।
4. सेक्टोरल फंड: ये फंड विशिष्ट क्षेत्रों या उद्योगों में निवेश करते हैं, जैसे कि टेक्नोलॉजी, फार्मास्यूटिकल्स, या ऑटोमोबाइल।

इक्विटी फंड के लाभ

1. विविधीकरण: इक्विटी फंड निवेशकों को विविधीकरण का अवसर प्रदान करते हैं, जिससे वे अपने निवेश को विभिन्न शेयरों में फैला सकते हैं।
2. पेशेवर प्रबंधन: इक्विटी फंड पेशेवर फंड प्रबंधकों द्वारा प्रबंधित किए जाते हैं, जो निवेशकों के लिए निवेश के निर्णय लेते हैं।
3. लिक्विडिटी: इक्विटी फंड निवेशकों को अपने निवेश को आसानी से बेचने और नकदी प्राप्त करने का अवसर प्रदान करते हैं।

इक्विटी फंड के जोखिम

1. बाजार जोखिम: इक्विटी फंड शेयर बाजार में निवेश करते हैं, जो बाजार की अस्थिरता के कारण जोखिम भरा हो सकता है।
2. कंपनी-विशिष्ट जोखिम: इक्विटी फंड विशिष्ट कंपनियों के शेयरों में निवेश करते हैं, जो कंपनी-विशिष्ट जोखिमों के अधीन हो सकते हैं।
3. इक्विटी फंड: निवेशकों के लिए एक अच्छा विकल्प हो सकता है जो शेयर बाजार में निवेश करने के इच्छुक हैं और जोखिम उठाने की क्षमता रखते हैं

करोड़पति बनाने वाली स्कीमों में लोग कर रहे जमकर निवेश, आठ गुणा तक बढ़ा पैसा

सिर्फ 9 साल में छू लिया आसमानी आंकड़ा, 28,265 करोड़ कर डाले निवेश, एसआईपी के जरिए म्यूचुअल फंड में निवेश लगातार बढ़ रहा

अपने पैसे को लोग अलग-अलग स्कीम में निवेश करते हैं। किसी स्कीम में रिटर्न कम मिलता है तो किसी में ज्यादा। वहीं जो लोग जोखिम लेते हैं, वे एसआईपी के जरिए म्यूचुअल फंड में निवेश करते हैं। यह एक ऐसी स्कीम है जिसमें लगातार छोटी रकम के निवेश से ही व्यक्ति करोड़पति बन सकता है। एक नई रिपोर्ट के अनुसार, एसआईपी के जरिए म्यूचुअल फंड में हर महीने जमा होने वाला पैसा पिछले नौ सालों में लगभग आठ गुना बढ़ गया है। व्हाइटओक कैपिटल म्यूचुअल फंड की एक रिपोर्ट बताती है कि अगस्त 2016 में एसआईपी के जरिए कुल 3,497 करोड़ रुपये आए थे। अगस्त 2025 तक ये आंकड़ा बढ़कर 28,265 करोड़ रुपये हो गया है। इससे पता चलता है कि निवेशकों का एसआईपी पर भरोसा बढ़ रहा है। वे इसे पैसे बनाने का एक अच्छा तरीका मान रहे हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि यह लगातार वृद्धि दिखाती है कि एसआईपी में निवेशकों का विश्वास बढ़ रहा है।

कितना रहा रिटर्न : अगस्त 1996 से अगस्त 2025 के बीच एसआईपी से मिलने वाला सबसे ज्यादा रिटर्न 55.6 प्रतिशत रहा। वहीं, सबसे कम रिटर्न -24.6 प्रतिशत रहा। लेकिन अगर औसत रिटर्न की बात करें, तो यह 14-16 प्रतिशत के आसपास रहा। यह इस बात पर निर्भर करता है कि आपने कितने समय के लिए निवेश किया है।

निवेश का कौन सा समय सही : रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि मार्केट में कब निवेश करना है, यह इतना जरूरी नहीं है जितना कि निवेश करते रहना। अगर आपने मार्केट के टॉप पर भी एसआईपी शुरू की थी, तो भी आपको लंबे समय में अच्छा फायदा हुआ होगा। उदाहरण के लिए, अगर किसी ने जनवरी 2008 में 10,000 रुपये की मंथली एसआईपी शुरू की थी, जो कि ग्लोबल फाइनेंशियल क्राइसिस से ठीक पहले का समय था, तो भी अगस्त 2025 तक उसका 21.2 लाख रुपये का निवेश बढ़कर 75.23 लाख रुपये हो गया होता। इस पर उसे लगभग 13 प्रतिशत का एक्सआईआरआर मिला होता। एक्सआईआरआर एक तरीका है जिससे पता चलता है कि आपके निवेश पर आपको कितना रिटर्न मिला है।

किस कैटेगरी का कितना रिटर्न : दिलचस्प बात यह है कि रिपोर्ट में यह भी पाया गया है कि मिड-कैप एसआईपी ने लॉन्ग टर्म में लार्ज-कैप और स्मॉल-कैप कैटेगरी से बेहतर रिटर्न दिया है। मिड-कैप एसआईपी का एवरेज रिटर्न 17.4 प्रतिशत रहा, जबकि लार्ज-कैप का 13 प्रतिशत और स्मॉल-कैप का 14.7 प्रतिशत रहा।

पांच लाख की रकम को कैसे करें निवेश कि मिले बढ़िया मुनाफा

अक्सर ज्यादा रिटर्न देने वाले विकल्पों की तलाश में रहते हैं निवेशक

प्लानिंग

बिजनेस डेस्क

अगर आपके पास 5 लाख रुपये हैं और आप इन्हें निवेश करना चाहते हैं तो यह रिपोर्ट आपके लिए बेहतर हो सकती है। देखने में आया है कि भारतीय निवेशक हमेशा सुरक्षित और ज़्यादा रिटर्न देने वाले निवेश विकल्पों की तलाश में रहते हैं। अगर आप भी अपनी एकमुश्त रकम को निवेश करना चाहते हैं और इसके लिए बेहतर ऑप्शन की तलाश में हैं एक बार जरूर देखें की आपके लिए पोस्ट ऑफिस की सकीम बेहतर रहेगी, बैंक की एफडी या फिर डेट फंड इनमें से कहा आपको ज्यादा मुनाफा मिल सकता है। निवेश का चुनाव हमेशा व्यक्ति की फाइनेंशियल कंडीशन, गोल्स और रिस्क सहने की क्षमता पर निर्भर करता है। ऐसे में जब 5 लाख या 10 लाख रुपये के एकमुश्त निवेश की बात आती है तो लोगों के लिए सही विकल्प चुनना और जरूरी हो जाता है क्योंकि इतनी बड़ी रकम को ऐसे ही कहीं भी निवेश नहीं किया जा सकता। ऐसे में बैंक की तरह पोस्ट ऑफिस एफडी भी वर्षों से सुरक्षित और विश्वसनीय निवेश ऑप्शन रही है। वहीं, हाल के वर्षों में डेट फंड भी एक लोकप्रिय ऑप्शन के तौर पर उभर रहा है। लोग इसे एफडी से बेहतर रिटर्न देने वाला ऑप्शन मानते हैं। आइए समझते हैं कि अगर 5 लाख रुपये का निवेश कहां ज्यादा मुनाफा दे सकता है।

एकमुश्त निवेश के लिए सही विकल्प चुनना बेहद जरूरी **पोस्ट ऑफिस एफडी भी वर्षों से सुरक्षित और विश्वसनीय निवेश ऑप्शन रही** अब हाल के वर्षों में डेट फंड भी लोकप्रिय ऑप्शन के तौर पर उभरा

पोस्ट ऑफिस फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी) की खासियत

- **सुरक्षा:** ये सबसे सुरक्षित निवेश विकल्पों में से एक है क्योंकि ये सरकार द्वारा समर्थित है.
- निश्चित रिटर्न: आपको निवेश की शुरुआत में ही ब्याज दर पता चल जाती है, जिससे रिटर्न का अनुमान लगाना आसान हो जाता है।
- लॉक-इन अवधि: तमाम टेन्योर के लिए उपलब्ध है, जैसे 1, 2, 3 और 5 साल।
- रेगुलर ब्याज भुगतान: आप मासिक, त्रैमासिक या वार्षिक आधार पर ब्याज प्राप्त करना चुन सकते हैं।

5 लाख के निवेश पर कितना होगा मुनाफा

- मान लीजिए कि आप पोस्ट ऑफिस की 5 साल की एफडी में निवेश कर रहे हैं। इस एफडी पर मौजूदा समय में 7.5% ब्याज मिल रहा है। अगर आप 5 लाख रुपये 5 साल के लिए निवेश करते हैं तो आपको 5 साल में 2,24,974 ब्याज मिलेगा और कुल मिलाकर 7,24,974 रुपये मिलेंगे।

डेट फंड की खासियत

- डेट फंड म्यूचुअल फंड की ही एक कैटेगरी है। इसमें खासतौर पर फिक्स्ड-इनकम सिक्योरिटीज जैसे सरकारी बॉन्ड, कॉर्पोरेट बॉन्ड, डिबेंचर, कमर्शियल पेपर और ट्रेजरी बिल में निवेश किया जाता है। इसका रिटर्न मार्केट बेस्ड होता है।
- **डायवर्सिफिकेशन:** डेट फंड तमाम तरह के हैं जैसे- लिक्विड फंड, अल्ट्रा-शॉर्ट ड्यूरेशन फंड, शॉर्ट ड्यूरेशन फंड, मीडियम ड्यूरेशन फंड और लॉन्ग ड्यूरेशन फंड, ऐसे में आपको डायवर्सिफिकेशन का मौका मिल जाता है।
- **लिक्विडिटी:** ये एफडी की तुलना में ज़्यादा लिक्विड होते हैं, क्योंकि आप अपनी यूनिट्स को किसी भी वर्किंग डे पर बेच सकते हैं (कुछ फंडों में एग्जिट लोड हो सकता है)।
- **प्रोफेशनल मैनेजमेंट :** फंड मैनेजर आपके पैसे का प्रबंधन करते हैं, जो बाज़ार की स्थितियों के आधार पर निवेश का फैसला लेते हैं।

5 लाख के निवेश पर रिटर्न

- डेट फंड का रिटर्न प्रदर्शन पर आधारित होता है और फ्यूचर में बदल सकता है। औसतन, कई डेट फंडों ने पिछले कुछ साल में 6-9% का रिटर्न दिया है। मान लीजिए आप 5 लाख रुपये 5 साल के लिए इसमें निवेश करते हैं और उस पर 9% का रिटर्न मिल रहा है तो 2,69,311 रुपये ब्याज के तौर पर मिलेंगे। इस तरह आपको कुल 5,00,000+2,69,312 = 7,69,312 रुपये मिलेंगे। हालांकि ये उदाहरण केवल अनुमानित है, वास्तविक रिटर्न फंड के प्रदर्शन पर निर्भर करेगा।

कौन सा विकल्प चुनें?

ये चुनाव आपकी व्यक्तिगत ज़रूरतों पर निर्भर करता है-जैसे जोखिम उठाने की क्षमता, अगर आप बिलकुल भी जोखिम नहीं लेना चाहते और अपनी पूंजी की 100% सुरक्षा चाहते हैं, तो पोस्ट ऑफिस एफडी आपके लिए बेहतर है। अगर आप थोड़ा जोखिम ले सकते हैं और एफडी से ज़्यादा रिटर्न चाहते हैं, तो डेट फंड एक अच्छा विकल्प है।

निवेश की अवधि

छोटी अवधि (3 साल से कम) के लिए, पोस्ट ऑफिस एफडी या शॉर्ट-ड्यूरेशन डेट फंड को देखा जा सकता है. लंबी अवधि (3 साल से ज़्यादा) के लिए, इंडेक्सेशन लाभ के कारण डेट फंड टैक्स के लिहाज़ से ज़्यादा कुशल और बेहतर रिटर्न दे सकता है।

कोई भी लोन लेने से पहले फायदे और नुकसान को जान लें

फिक्स्ड, फ्लोटिंग या फिर हाइब्रिड होम लोन के लिए कौन-सी ब्याज दर बेहतर, फिक्स्ड रेट वाले लोन तब बेहतर होते जब ब्याज दरें बढ़ रही हों

तैयारी

बिजनेस डेस्क

जब लोन पर घर खरीदने जार रहे हों तो एक बार बैंकों की ब्याज दरों को जांच लें। किसी जानकारी से सलाह ले लें। इससे आपको परेशानी नहीं होगी और आसानी से घर खरीद सकेंगे। अक्सर जब लोग घर खरीदने के लिए होम लोन लेते हैं, तो सबसे बड़ा सवाल यही होता है कि किस तरह का इंटरेस्ट रेट चुना जाए। फिक्स्ड, फ्लोटिंग और हाइब्रिड तीनों विकल्पों के अपने फायदे और नुकसान हैं। सही चुनाव करने से आपकी ईएमआई और लंबे समय की फाइनेंशियल प्लानिंग पर बड़ा असर पड़ता है। इसलिए इस सवाल का जवाब लोन लेने से पहले ही जान लेंगे तो आसानी रहेगी।

फिक्स्ड इंटरेस्ट रेट लोन

- फिक्स्ड रेट में आपकी ईएमआई पूरी लोन अवधि या शुरुआती कुछ साल तक एक जैसी रहती है। इसका फायदा यह है कि ब्याज दरें बढ़ने पर भी आपकी ईएमआई नहीं बदलती। इससे आपको हर महीने का खर्च आसानी से मैनेज करने में मदद मिलती है। हालांकि, इसका नुकसान यह है कि अगर ब्याज दरें घट जाएं तो इसका फायदा आपको नहीं मिलेगा। साथ ही, शुरुआती दरें भी अक्सर फ्लोटिंग से ज्यादा होती हैं। यह विकल्प उन लोगों के लिए बेहतर है, जिन्हें स्थिरता चाहिए और ईएमआई में उतार-चढ़ाव नहीं चाहते।

फ्लोटिंग इंटरेस्ट रेट लोन

- फ्लोटिंग रेट आरबीआई की नीतियों और मार्केट की परिस्थितियों के हिसाब से बदलता है। इसका सबसे बड़ा फायदा यह है कि ब्याज दर घटने पर ईएमआई कम हो जाती है। इससे लंबे समय में यह फिक्स्ड से सस्ता साबित हो सकता है। होम लोन लेने वाले ज्यादातर लोग यही विकल्प चुनते हैं। मार्केट की स्थिति अर्थव्यवस्था में महंगाई और ब्याज दरों की दिशा होम लोन पर सीधा असर डालती है। जब महंगाई बढ़ती है तो बैंक ब्याज दरें ऊपर कर देते हैं ताकि जोखिम कम हो। वहीं स्थिर बाजार में ब्याज दरें अक्सर सस्ती हो जाती हैं। इसलिए टाइमिंग भी अहम फैक्टर है। लेकिन, फ्लोटिंग रेट की अपनी खामियां हैं। अगर ब्याज दर बढ़ जाएं तो EMI भी बढ़ जाती है। यह आपका पूरा बजट भी बिगाड़ सकती है। यह विकल्प उन लोगों के लिए ज्यादा सही रहता है, जो लंबे समय तक लोन लेने वाले हैं और ईएमआई में उतार-चढ़ाव सह सकते हैं।

हाइब्रिड इंटरेस्ट रेट लोन

- हाइब्रिड लोन में शुरुआती कुछ सालों तक ईएमआई फिक्स्ड रहती है और उसके बाद यह फ्लोटिंग में बदल जाती है। इस तरह पहले कुछ सालों तक स्थिरता मिलती है और बाद में मार्केट के हिसाब से ब्याज दरें घटने पर फायदा हो सकता है। हालांकि शुरुआती दरें फ्लोटिंग से थोड़ी ज्यादा हो सकती हैं और अगर बाद में ब्याज दरें बढ़ जाएं तो ईएमआई भी बढ़ेगी। यह विकल्प उन लोगों के लिए सही है जो शुरुआत में ईएमआई स्थिर रखना चाहते हैं और आगे चलकर रिस्क लेने को तैयार हैं।

क्या है एक्सपर्ट की राय?

जानकारों का कहना है कि फिक्स्ड रेट वाले लोन तब बेहतर होते हैं जब ब्याज दरें बढ़ रही हों। ये उन लोगों के लिए ठीक हैं जिन्हें स्थिरता चाहिए या लगता है कि दरें आगे और बढ़ेंगी। वहीं, फ्लोटिंग रेट घटती ब्याज दर वाले माहौल में सही रहते हैं। हाइब्रिड होम लोन उन लोगों के लिए होते हैं जो शुरू में कुछ साल तक निश्चित ईएमआई चाहते हैं, लेकिन आगे चलकर बाजार के हिसाब से ब्याज दरों का फायदा उठाना चाहते हैं।लोन की अवधि का असर लोन का टेन्योर जितना लंबा होगा, कुल ब्याज का बोझ उतना ज्यादा होगा। छोटी अवधि का लोन लेने पर ईएमआई थोड़ी बड़ी होगी लेकिन ब्याज की बचत काफी होगी। इसलिए अपनी क्षमता के हिसाब से संतुलित अवधि चुनना बेहतर रहता है।

लोन लेने की लागत स्थिर

अभी की स्थिति देखें तो लोन लेने की लागत स्थिर हो रही है। आरबीआई की ओर से रेपो रेट में हालिया कटौतियों से ग्राहकों का भरोसा भी बढ़ा है। इस समय फ्लोटिंग रेट होम लोन की ब्याज दर अपेक्षाकृत कम हैं। इसलिए यह उन लोगों के लिए अच्छा विकल्प है जो कुल ब्याज खर्च घटाना चाहते हैं।'होमबायर्स को आखिरी फैसला लेने से पहले कुछ बातों पर जरूर विचार करना चाहिए। जैसे कि अभी अलग-अलग लोन ऑप्शन पर ब्याज दर में कितना फर्क है और लोन अवधि कितनी लंबी है। अगर लोन लंबे समय के लिए है तो फ्लोटिंग रेट से फायदा हो सकता है, क्योंकि आगे चलकर अगर दरें घटती हैं तो कुल ब्याज का बोझ कम होगा।

ऐसे कर सकते हैं प्लानिंग

- 1. **वित्तीय स्थिति का मूल्यांकन :** अपनी वित्तीय स्थिति का मूल्यांकन करें और देखें कि आप कितना होम लोन ले सकते हैं। अपनी आय, व्यय, और बचत को ध्यान में रखें।
- 2. **होम लोन की आवश्यकता :** अपने होम लोन की आवश्यकता को निर्धारित करें। आपको कितनी राशि की आवश्यकता है? आप कितने समय में लोन चुकाना चाहते हैं?
- 3. **ब्याज दरें और शर्तें :** विभिन्न बैंकों और वित्तीय संस्थानों की ब्याज दरें और शर्तें तुलना करें। सबसे अच्छा विकल्प चुनें जो आपकी आवश्यकताओं को पूरा करता है।
- 4. **लोन की अवधि :** लोन की अवधि का चयन करें जो आपकी वित्तीय स्थिति के अनुसार उपयुक्त हो। लंबी अवधि के लोन में मासिक किस्त कम होती है, लेकिन कुल ब्याज अधिक होता है।
- 5. **प्रोसेसिंग फीस और अन्य शुल्क :** प्रोसेसिंग फीस और अन्य शुल्कों को ध्यान में रखें। ये शुल्क आपके लोन की कुल लागत को बढ़ा सकते हैं।
- 6. **क्रेडिट स्कोर :** अपने क्रेडिट स्कोर को जांचें और सुनिश्चित करें कि यह अच्छा है। एक अच्छा क्रेडिट स्कोर आपको बेहतर ब्याज दरों और शर्तों के लिए योग्य बना सकता है।
- 7. **विकल्पों की तुलना :** विभिन्न होम लोन विकल्पों की तुलना करें और सबसे अच्छा विकल्प चुनें जो आपकी आवश्यकताओं को पूरा करता है।
- 8. **वित्तीय सलाहकार से परामर्श :** यदि आवश्यक हो, तो वित्तीय सलाहकार से परामर्श लें। वे आपको होम लोन के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान कर सकते हैं और आपको सबसे अच्छा विकल्प चुनने में मदद कर सकते हैं।

नशा मुक्त टीम से एएसआई जितेन्द्र कुमार ने किया जागरूक

पुलिस टीम ने ग्रामीणों को नशे के दुष्प्रभाव व बचाव के तरीके बताएं

■ नशा एक ऐसी बुराई है, जिससे व्यक्ति का अनमोल जीवन समय से पहले ही मौत का शिकार हो जाता है

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

रेवाड़ी। ग्रामीणों को जागरूक करते हुए पुलिस टीम। फोटो : हरिभूमि

जिला पुलिस की नशा मुक्त टीम ने शनिवार को गांव घासेड़ा व किशनगढ़ में डोर टू डोर सम्पर्क करके ग्रामीणों के साथ बैठक की तथा गांवों को नशा मुक्त बनाने तथा युवाओं को नशे से दूर रखने को लेकर विचार-विमर्श किया। नशा मुक्त टीम से एएसआई जितेन्द्र कुमार ने कहा कि पुलिस और आमजन अगर आपस में तालमेल के साथ कार्य करें तो नशे जैसी बुराई पर नियंत्रण पाया जा सकता है। नशा एक ऐसी बुराई है, जिससे व्यक्ति का अनमोल जीवन समय से पहले ही मौत का शिकार हो जाता है। नशा करने वाला व्यक्ति अपने साथ साथ पूरे परिवार का जीवन खराब कर देता है। उन्होंने कहा कि सबसे पहले युवा पीढ़ी को नशे से बचाना होगा। उन्होंने कहा कि पुलिस के इस अभियान से प्रेरित होकर जहां युवा शिक्षा और खेल गतिविधियों की ओर अग्रसर हो रहे हैं, वहीं पर अनेक नशा ग्रस्त युवकों ने नशा छोड़ने की पहल भी की है, जिनका प्रशासन की मदद से इलाज कराकर फिर से समाज की मुख्यधारा में शामिल किया गया है।

हेल्पलाइन नंबर 1933 या 112 नंबर पर सूचित करें

उन्होंने कहा कि अगर किसी के पास किसी भी प्रकार की नशे संबंधी सूचना है या कोई व्यक्ति नशे का प्रयोग करता है या नशे की सप्लाई इत्यादि करता है तो पुलिस को मानस हेल्पलाइन नंबर 1933 या 112 नंबर पर सूचित करे। उन्होंने गांव के नौजवानों और बच्चों से अपील करते हुए कहा कि वे नशे के विरुद्ध इस मुहिम में पुलिस का सहयोग करे। गांव में किसी भी परिवार में कोई भी व्यक्ति नशे का सेवन करता है तो उसे नशा छोड़ने के लिए प्रेरित करें, जिला पुलिस इसमें पूरा सहयोग करेगी।

पुलिस टीम ने पैदल गश्त करके नागरिकों में सुरक्षित माहौल व अपराधियों में बनाया डर

रेवाड़ी। जिले के नागरिकों में सुरक्षा की भावना को मजबूत करने और अपराधों पर अंकुश लगाने के उद्देश्य से पुलिस की टीमें लगातार पैदल गश्त कर रही है। शनिवार को एसएचओ धारूहेड़ा इंस्पेक्टर जगदीश चंद व एसएचओ कसोला इंस्पेक्टर शिव दर्शन ने अपनी टीमों के साथ क्षेत्र में सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लेने के लिए पैदल गश्त की। इस दौरान उन्होंने स्थानीय निवासियों से बातचीत करके उनकी समस्याएं सुनी और क्षेत्र में कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए सहयोग की अपील की। पुलिस टीम ने क्षेत्र के मुख्य बाजार, बस स्टैंड, धार्मिक स्थलों और भीड़भाड़ वाले इलाकों का निरीक्षण किया। उन्होंने दुकानदारों, व्यापारियों और युवाओं से सीधा संवाद किया और पुलिस व्यवस्था को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए उनके सुझाव भी लिए। इस मौके पर एसएचओ ने कहा कि प्रत्येक नागरिक स्वयं को सुरक्षित महसूस करे, यही पुलिस की सर्वोच्च प्राथमिकता है। पुलिस जनता की मित्र है और हमारा निरंतर प्रयास है कि अपराधों की रोकथाम के साथ-साथ आमजन का पुलिस पर विश्वास भी सुदृढ़ हो। उन्होंने क्षेत्र के युवाओं को नशे से दूर रहने और शिक्षा एवं खेल गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित किया। इसके अलावा महिलाओं की सुरक्षा पर विशेष ध्यान देने पर बल दिया।

रेवाड़ी। सुरक्षा को लेकर पैदल गश्त करते हुए पुलिस टीम।

खबर संक्षेप

भाषण में दीक्षा और निबंध प्रतियोगिता में नेहा बनी विजेता

रेवाड़ी। अहीर महाविद्यालय में हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। हिंदी विभाग की ओर से आयोजित कविता पाठ, भाषण तथा निबंध प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस मौके पर डा. संगीता राव ने विद्यार्थियों को हिंदी दिवस की बधाई देते हुए हिंदी की वर्तमान दशा से अवगत कराया। उन्होंने कहा कि वर्तमान में हिंदी की स्थिति पहले से अधिक सुदृढ़ है। डा. राव ने विद्यार्थियों को प्रतियोगिता के नियमों से अवगत कराया। कविता पाठ प्रतियोगिता में दीक्षा प्रथम, मानसी द्वितीय व धीरज तीसरे स्थान पर रहा तथा खुशी को सांत्वना पुरस्कार मिला। भाषण प्रतियोगिता में दीक्षा प्रथम व शालिनी दूसरे स्थान पर रही। निबंध प्रतियोगिता में नेहा प्रथम, मानसी दूसरे तथा मोहिनी तीसरी स्थान पर रही। निर्णायक मंडल की भूमिका मीनाक्षी, डा. रजनी तथा डा. मोनिका यादव ने निभाई। डा. मोनिका यादव ने हिंदी भाषा के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए सभी का आभार व्यक्त किया।

नागरिक अस्पताल व थाने में भेंट किए पंखे

कोसली। कोसली के मिडलैंड माइक्रोफिन लिमिटेड बैंक की ओर से शनिवार को सामाजिक उत्तरदायित्व के अंतर्गत नागरिक अस्पताल व कोसली थाने में सिलिंग फैन भेंट किए गए। बैंक के प्रबंधक मनोज चौधरी व क्रेडिट मैनेजर निशा यादव ने बताया कि बैंक के कारोबार में अच्छा प्रदर्शन करने पर बैंक द्वारा सामाजिक दायित्व के नाते उक्त पंखे भेंट किए गए हैं। कोसली के सिविल अस्पताल में दो व कोसली थाने में छह पंखे भेंट किए गए। बैंक के प्रबंधक ने कहा कि उनका बैंक लोगों को ऋण देने के साथ-साथ समाज सेवा के कार्यों में भी अग्रणी है। इस अवसर पर बैंक कर्मी सुरेंद्र कुमार व अनिल कुमार भी मौजूद थे।

धनौंदा गांव में आंख जांच कैम्प आज

नारनौल। बाबा निहालचंद सेवादल की ओर से 14 सितंबर को गांव धनौंदा में आंखों का निःशुल्क कैंप लगाया जाएगा। जिसमें दवाइयां, आंखों का ऑपरेशन फ्री किया जाएगा।

इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय मीरपुर में 13वें स्थापना दिवस पर कार्यक्रम

शिक्षा केवल डिग्री लेने का साधन नहीं बल्कि व्यक्तित्व के विकास का माध्यम

नव-प्रवेशित विद्यार्थियों के लिए दीक्षा आरंभ कार्यक्रम का आयोजन किया।

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

रेवाड़ी। कार्यक्रम में विवि के प्रतिभावान विद्यार्थियों को सम्मानित करते कुलपति व स्टाफ सदस्य। फोटो : हरिभूमि

इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय मीरपुर में विश्वविद्यालय के 13वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में नव प्रवेशित विद्यार्थियों के लिए प्रेरक दीक्षा आरंभ कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता आईजीयू के कुलपति प्रोफेसर असीम मिगलानी ने की। कार्यक्रम का शुभारंभ मां शारदे के समक्ष दीप प्रज्वलित करके व विश्वविद्यालय कुलगीत से किया गया।

अधिष्ठाता शैक्षणिक मामले प्रो. सुनील कुमार ने नव प्रवेशित विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए सभी विद्यार्थियों को विवि का विजन और मिशन बताते हुए विभिन्न कार्यक्रमों और शैक्षणिक पाठ्यक्रमों की जानकारी दी। उन्होंने अकेडमिक उपलब्धियां एवं छात्र-छात्राओं की शोध कार्यों में उपलब्धियों का ब्योरा भी दिया। उन्होंने विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय की यूजीसी रैगिंग विरोधी नीति, प्रयोगशालाओं, कोर्स क्रेडिट प्रणाली, सूचना प्रणाली, नियम, शिक्षा प्रणाली और विश्वविद्यालय स्तर पर मिलने वाली सुविधाओं के बारे में अवगत कराया। अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. करण सिंह ने विवि में वर्ष भर आयोजित होने वाले साहित्यिक, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और राष्ट्रीय सेवा योजना, यूथ रेडक्रॉस इकाइयों की गतिविधियों से जुड़ने के लिए विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया।

इस मौके पर कुलपति प्रो. असीम मिगलानी ने सभी नव प्रवेशित विद्यार्थियों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को लागू कर विद्यार्थियों को गुरु-शिष्य परंपरा से जोड़ने की पहल की है। शिक्षा केवल डिग्री लेने का साधन नहीं है, बल्कि यह व्यक्तित्व के संपूर्ण विकास का माध्यम है। शिक्षा हमें विचारवान और समाज के कल्याण के योग्य बनाती है। श्रेष्ठ नागरिक ही श्रेष्ठ राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं।

जीवन की असफलताओं से घबराना नहीं

उन्होंने कहा कि हमें जीवन की असफलताओं से घबराना नहीं है, बल्कि परिश्रम और अनुशासन के साथ सकारात्मक सोच को अपनाकर जीवन में आगे बढ़ते रहना है। उन्होंने युवाओं के प्रेरणा स्रोत स्वामी विवेकानंद के कथन 'उठो जागो और लक्ष्य प्राप्ति तक मत रुको' के द्वारा सभी को आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि सभी विद्यार्थी खेलों एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी दिखाएं, समय का सदुपयोग करें और क्षमताओं पर विश्वास रखते हुए अपने कौशल को बढ़ाकर नई ऊर्जा के साथ एक अच्छे राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दे। लाइब्रेरियन प्रो. पंकज कुमार त्यागी ने अटल बिहारी वाजपेई पुस्तकालय में मौजूद विभिन्न शोध की पुस्तकों व कार्यप्रणाली की जानकारी दी। चीफ वार्डन प्रो. सतीश कुमार ने महाराणा प्रताप पुरुष छात्रावास, रानी लक्ष्मी बाई महिला छात्रावास एवं भगिनी निवेदिता महिला छात्रावास की कार्यप्रणाली व सुविधाओं से अवगत कराया। निदेशक युवा कल्याण प्रो. अदिति शर्मा ने कुलपति, सभी शिक्षकों, गैर शिक्षक कर्मचारी, विद्यार्थियों व शोधार्थियों का धन्यवाद किया। उन्होंने सभी युवाओं से आह्वान किया कि वे खेलों में भागीदारी बढ़ाते हुए अपना लक्ष्य प्राप्त करें एवं विश्वविद्यालय के साथ-साथ अपने माता-पिता का नाम भी रोशन करें। उन्होंने बताया कि खेल विभाग विजेता छात्राओं को नकद पुरस्कार राशि प्रदान करता है। विद्यार्थी अपनी रुचि के अनुरूप किसी एक खेल को अपनाकर अपना श्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए आगे बढ़े। उन्होंने सभी युवाओं को कड़ी मेहनत के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। इस मौके पर विद्यार्थियों ने हरियाणवी गीतों पर अनेक सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी। कुलपति व स्टाफ ने विभिन्न मंचों पर इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व करने वाले प्रतिभावान छात्र-छात्राओं को सम्मानित भी किया।

कालीं माता मंदिर में श्रीमद्भागवत कथा

श्रीमद् भागवत कथा में श्री कृष्ण-रुक्मणी विवाह का किया वर्णन

रेवाड़ी। कथा के दौरान अतिथियों का सम्मान करते आयोजक।

■ श्रद्धालुओं को माता-पिता की सेवा करने का संकल्प भी दिलाया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

शहर के मोहल्ला बलभद्र सराय स्थित काली माता मंदिर में चल रही श्रीमद् भागवत कथा में कथा व्यास पुरुषोत्तम महाराज ने भगवान श्री कृष्ण एवं रुक्मणी की शादी का वर्णन किया। विवाह उत्सव पर श्रद्धालु हर्षोल्लास के साथ भजनों पर झूमे। इस मौके पर आचार्य दलीप शास्त्री ने कहा कि श्राद्ध के समय हमें अपने पितरों की पूजा-अर्चना के साथ-साथ बुजुर्गों की सेवा भी करनी चाहिए। यही सबसे बड़ा पुण्य है। उन्होंने श्रद्धालुओं को माता-पिता की सेवा करने का संकल्प भी दिलाया। इस मौके पर मुख्य अतिथि सामाजिक कार्यकर्ता रविंद्र आशावादी एवं कार्यकारिणी सदस्यों को मंदिर महंत अभय महाराज एवं कमेटी सदस्यों ने सम्मानित किया। मुख्य अतिथि आशावादी ने कहा कि भगवान श्री कृष्ण एवं भगवान बलराम यादव ने गोमाताओं की रक्षा, सेवा व सम्मान किया। 14 सितंबरको श्रीमद् भागवत कथा के समापन पर भंडारे का आयोजन किया जाएगा। कथा के समापन पर मुख्य अतिथि गोरक्षक देवेंद्र यादव उर्फ सोनू सरपंच फिदेडीं के पिता शीशराम यादव होंगे। इस मौके पर समाजसेवी प्रथम अग्रवाल ने कहा कि रेवाड़ी का नाम बदलकर रेवती नगर किया जाना चाहिए। इस अवसर पर राजकुमार, तुलाराम यादव, मोहित यादव, मुकेश पंडित, दीपक सैनी, टिंकू सैनी, सुरेंद्र प्रधान, नवीन,अंकित, अंस, हर्ष, यश,जतिन, हिमांशु व कुशाल सहित अनेक लोग मौजूद थे।

भाजपा लीगल सेल की बैठक में सेवा पखवाड़े को लेकर की चर्चा

रेवाड़ी। बैठक में उपस्थित भाजपा लीगल सैल के पदाधिकारी व कार्यकर्ता।

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

शनिवार को भाजपा जिला कार्यालय में भाजपा लीगल सैल की बैठक आयोजित की गई। लीगल सैल के जिला अध्यक्ष एडवोकेट बिरेन कुमार यादव की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में जिला प्रभारी एडवोकेट तरूण कुमार कौशिक व भाजपा जिला अध्यक्ष डा. वन्दना पोपली मौजूद थे। इस मौके पर एडवोकेट कौशिक ने कहा कि लीगल सैल भाजपा का एक महत्वपूर्ण सैल है, जो समय-समय पर अपने परामर्श से पार्टी को मजबूती प्रदान करता है। उन्होंने कहा कि इस बार 17 सितंबर से 2 अक्टूबर तक सेवा पखवाड़ा मनाया जा रहा है, जिसमें सभी अधिवक्ताओं को बढ-चढ़कर अपना सहयोग देना है। इस अवसर पर लीगल सैल के पूर्व जिला संयोजक एडवोकेट अनूप धनखड़, एडवोकेट प्रमोद चौहान, एडवोकेट भरत सिंह, एडवोकेट राम सिंह छावड़ी, एडवोकेट नितिन वर्मा, एडवोकेट राहुल यादव, एडवोकेट प्रवीण कुमार, एडवोकेट यश्वनी, एडवोकेट रोहित यादव, एडवोकेट मुकेश रंगा आदि मौजूद रहे।

कोसली कॉलेज में हिंदी दिवस पर भाषण एवं कविता पाठ प्रतियोगिता आयोजित

हरिभूमि न्यूज ▶▶ कोसली

रेवाड़ी। कोसली के राजकीय महाविद्यालय में छात्रा को प्रमाण पत्र प्रदान करते मुख्य अतिथि। फोटो : हरिभूमि

कोसली के राजकीय महाविद्यालय में हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में भाषण एवं कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस अवसर पर भाजपा के वरिष्ठ नेता वीर कुमार यादव बतौर मुख्य अतिथि तथा रमेश शर्मा बतौर विशिष्ट अतिथि उपस्थित थे। प्राचार्या डा. लाज कौशल ने अतिथियों का स्वागत किया और महाविद्यालय में गणित विषय की स्नातकोत्तर कक्षाओं को प्रारंभ कराने में वीर कुमार यादव के अहम योगदान की चर्चा की। प्राचार्या ने विद्यार्थियों से अपनी दिनचर्या में हिंदी साहित्य पठन को शामिल करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि हिंदी न केवल एक भाषा है, बल्कि हमारी संस्कृति और राष्ट्रीय एकता का प्रतीक भी है। वीर कुमार यादव ने विद्यार्थियों से अपने विद्यार्थी जीवन के अनुभव साझा किए और कहा कि विद्यार्थियों को सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेना चाहिए।

बावल कॉलेज में हिंदी दिवस पर भाषण व काव्य पाठ प्रतियोगिता का आयोजन

बावल। राजकीय महाविद्यालय बावल में शनिवार को हिंदी विभाग की ओर से हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर काव्य पाठ व भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें मोनिका, दीपक व भीम ने काव्य पाठ की प्रस्तुति दी तथा अंजू, रोहित व निशा ने भाषण प्रतियोगिता में भाग लिया। महाविद्यालय की प्राचार्या डा. नमिता ने हिंदी भाषा के महत्व पर प्रकाश डाला। डा. इन्द्रजीत व मनीष कुमार ने भी हिंदी भाषा पर अपने विचार व्यक्त किए। सावित्री देवी ने मंच संचालन किया। इस अवसर पर सुदेश देवी, ऊषा कुमारी, डा. बबीता, संतपाल, रेखा चोपड़ा, पूजा ग्रोवर, डा. नीतू सिंह व डा. नीरू यादव मौजूद थे।

रेवाड़ी। प्रतियोगिता में भाषण देते हुए छात्रा व मौजूद शिक्षक। फोटो : हरिभूमि

सैनिक स्कूल में हिंदी पखवाड़े की अंतरसदनीय प्रतियोगिताओं का किया आयोजन

कारगिल सदन विजेता और रेजांगला सदन उपविजेता बना

प्रतियोगिता में नवागंतुक कक्षा के अठारह कैडेट्स ने प्रस्तुतियां दी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

रेवाड़ी। प्रतियोगिता के विजेता कैडेट्स प्राचार्य व शिक्षकों के साथ।

गांव गोठड़ा अहीर स्थित सैनिक स्कूल में कनिष्ठतम समूह 'स' कक्षा छठी की अंतरसदनीय हिंदी कथा वाचन, वक्तृत्व कला व काव्य पाठ प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें कारगिल व रेजांगलॉ सदनों ने भाग लिया। सभी वरिष्ठ सदनों के विभाजन अनुरूप कथा वाचन, वक्तृत्व कला व काव्य पाठ के लिए अलग-अलग विषय रखे गए। कथा वाचन के लिए नैतिक मूल्य-पंचतंत्र शिक्षाधारित, महापुरुषों के जीवन से प्रेरित, सैन्य वीरता व देशभक्ति पर आधारित, वक्तृत्व कला के लिए लक्ष्य निर्धारण और निरंतर प्रयास, छोटे कदम और बड़ा परिवर्तन, शिक्षा राष्ट्र निर्माण का आधार, देश की उन्नति में प्रत्येक नागरिक की भूमिका, भारतीय सेना के साहसिक अभियान, रक्षा सेवाओं में तकनीकी नवाचार व काव्य पाठ के लिए प्रतिभागी द्वारा स्वरचित-देशभक्ति आधारित, वीररस आधारित व हास्य-व्यंग्य आधारित विषयों का चयन किया गया। प्रतियोगिता में नवागंतुक कक्षा के अठारह कैडेट्स ने अपनी प्रस्तुतियां दी। विद्यालय प्राचार्य कैप्टन ब्रिज किशोर ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की तथा उप-प्राचार्या स्क्वाड्रन लीडर वंदना चौधरी व विद्यालय वरिष्ठ अध्यापक गजेंद्र सिंह चौहान भी मौजूद थे। प्रतियोगिता में निर्णायकों की भूमिका दुर्गा सिंह शेखावत, योगेश कुमार सिंघल टीजीटी हिंदी व अरूण कुमार द्विवेदी टीजीटी सामाजिक विज्ञान ने निभाई। हिंदी वक्तृत्व कला प्रतियोगिता में रेजांगला सदन के कैडेट दक्ष ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, वहीं कैडेट मंत्र रेजांगला सदन ने द्वितीय व कैडेट ध्रुव कारगिल सदन ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। हिंदी कथा वाचन प्रतियोगिता में कारगिल सदन के कैडेट जय सोलंकी ने प्रथम, रेजांगला सदन के कैडेट भूमित ने द्वितीय व कारगिल सदन के कैडेट पीयूष कौशिक ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

विजेता छात्रों को पुस्तकें व प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया

इस मौके पर प्राचार्य कैप्टन ब्रिज किशोर ने कहा कि नवांगतुकों कैडेट्स में आत्मविश्वास, भाषाओं के प्रति व्यापक रुचि संवर्धन, वाचन कला जागरूकता व मंच भय समाप्ति के लिए विद्यालय में विभिन्न गतिविधियों व कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। हिंदी में अभिव्यक्ति राष्ट्रीय एकता और गौरव की बात है। हिंदी संवाद की भाषा है, जो हम सब को एकता के सूत्र में पिरोती है। हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान है, बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है। उन्होंने कैडेट्स से विद्यालय में समय-समय पर आयोजित इन गतिविधियों में बढ़-चढ़कर भाग लेने व भाषा कौशल संवर्धन एवं गरिमा को बनाए रखने का आह्वान भी किया। उन्होंने प्रतियोगिताओं के विजेता छात्रों को पुस्तकें व प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर शिक्षकों ने हिंदी की उपयोगिता, अनिवार्यता व इसके महत्व पर विचार भी प्रकट किए। कैडेट्स ने हिंदी भाषा के संवर्धन के प्रति सदैव ऊजार्वान रहने एवं निरंतर प्रयासरत रहने की शपथ भी ली। प्राचार्य ने सभी प्रभारी अध्यापकों, सदनाध्यक्षों, कर्मचारियों तथा सभी अकादमिक-प्रशासनिक कर्मियों का उत्साहवर्धन किया। कार्यक्रम छात्र प्रभारी कैडेट आयुष सैनी थे, वहीं मंच संचालन कैडेट आयुष श्रीवास्तव, कैडेट आदित्य सोनी व हिरल महलान ने किया। प्रतियोगिता समग्र प्रभारी प्रवीण टीजीटी हिंदी थे।

सूचना

मैं, पवन कुमार पुत्र श्री सत्यदेव निवासी रेलवे स्टेशन कोसली तहसील कोसली जिला रेवाड़ी बयान करता हूं कि मेरे असल दस्तावेज बैयनामा वसीका नम्बर 1416 दिनांकित 22.03.1999, बैयनामा वसीका नम्बर 1739 दिनांकित 29.08.2011 व बैयनामा वसीका नम्बर 3441 दिनांकित 06.12.2011 कोसली बाजार में गुम हो गए हैं। यदि उपरोक्त दस्तावेज मुझे मिल जाते हैं तो मैं उनका दुरुपयोग नहीं करूंगा।

खबर संक्षेप

ऑटो में नकदी व फोन छीनने के आरोपी पकड़े

रेवाड़ी। ऑटो में सवार हुए दो युवकों में से एक की जेब से नकदी व फोन छीनने के मामले में नाबालिग सहित तीन को मॉडल टाउन पुलिस किया है। दो को कोर्ट में ने जेल और नाबालिग को बाल सुधार गृह भेजने के आदेश हुए। पुलिस को 12 सितंबर को दर्ज शिकायत में एमपी के देवकच्छी निवासी मोनू धाकड़ ने बताया था कि वह और उसका दोस्त देवकच्छ निवासी सचिन करनावास बस स्टैंड से स्टेशन जाने के लिए ऑटो में सवार हुए थे। ऑटो में सवार दो युवकों ने छीनाझपटी कर जेब से करीब 3 हजार रुपये निकाल लिए। उसका मोबाइल छीनने के बाद आरोपी नेशनल हाइवे की ओर भगा ले गए। पुलिस ने क्षेत्र के एक गांव निवासी नाबालिग को अभिरक्षा में ले लिया। यूपी के निहालसिंह का पुरवा निवासी प्रियांशु और यूपी के ही ढीका पखनपुर निवासी अनिल को गिरफ्तार कर लिया।

यादव कल्याण सभा का फ्री हेल्थ कैंप आज

रेवाड़ी। यादव कल्याण सभा की ओर से 14 सितंबर को सुबह 9 से 11 बजे तक गढ़ी बोलनी रोड स्थित श्री कृष्ण भवन में फ्री चिकित्सा शिविर आयोजित किया जाएगा। यादव सभा प्रवक्ता प्रो. सतीश यादव ने बताया कि शिविर मे डा. एच आर यादव मेडिसिन, डा. प्रशांत यादव हड्डीरोग, डा. सुनील यादव सर्जरी, डा. सुमन यादव स्त्रीरोग, डा. योगेन्द्र यादव चर्मरोग, डा. कंचन यादव नेत्ररोग व डा. मनीष यादव ईएनटी के मरीजों को ओपीडी सेवाएं प्रदान करेंगे।

मारपीट और अभद्रता करने पर केस दर्ज

कोसली। टूमना गांव के एक व्यक्ति ने गांव के ही एक व्यक्ति पर मारपीट,अभद्र गालियां देने व दाव से हमला करने का आरोप लगाते हुए कोसली थाने में मामला दर्ज कराया है। संदीप ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि वह शुक्रवार सुबह अपने खेत से घर आ रहा था कि गांव के विक्रान्त ने उनका रास्ता रोककर उसके साथ मारपीट की और गालियां दी तथा विक्रांत ने हाथ में लिए दाव से उस पर हमला कर दिया।

प्रशासनिक अधिकारियों के साथ जय गुरुदेव संस्था के प्रतिनिधियों व नागरिकों ने की सफाई

लंबे समय बाद सफाई अभियान से सुधरी ब्रास मार्केट की दशा, दुकानों के आगे रैंप भी तोड़े

लोगों को घर का कचरा बाहर सड़कों या नालियों में न फेंकने के लिए प्रेरित भी किया

हरिभूमि न्यूज ⏭रेवाड़ी

शहर स्वच्छता अभियान के तहत जिले की प्रशासनिक टीम के साथ आमजन शहर के सभी वार्डों में पूर्ण स्वच्छता के लिए गलियों, नालियों व सड़कों की साफ-सफाई व प्लास्टिक निषेध करते हुए सौंदर्यीकरण व सुधारीकरण करने की दिशा में काम कर रहे है। अभियान के तहत डोर-टू-डोर कचरा एकत्रित करते हुए लोगों को अपने घर का कचरा बाहर सड़कों या नालियों में न फेंकने के लिए प्रेरित भी किया जा रहा है। सार्वजनिक स्थानों पर कूड़ेदान रखने, पॉलीथिन का उपयोग न करने और घर-घर से कचरा उठाने पर विशेष बल दिया जा रहा है। अभियान में नगर परिषद के सफाई कर्मियों के साथ नोडल अधिकारियों, आरडब्ल्यूए, स्वयंसेवी संस्थाएं, सामाजिक संगठन और नागरिक सहयोग कर रहे हैं।

विभिन्न विभागों के नियुक्त नोडल अधिकारी निरंतर स्वच्छता अभियान की मॉनिटरिंग कर रहे

रेवाड़ी। ब्रास मार्केट में सफाई करते आम नागरिक। फोटो: हरिभूमि

100 सदस्यों ने चलाया सफाई अभियान

शनिवार को शहर के ब्रास मार्केट में विशेष सफाई अभियान चलाया गया। जिला नगर आयुक्त ब्रह्मप्रकाश, सीटीएम जितेन्द्र कुमार व कार्यकारी अधिकारी नगर परिषद सुशील कुमार के नेतृत्व में जय गुरुदेव संस्था के प्रतिनिधियों ने ब्रास मार्केट में सफाई की। मार्केट में नालों की सफाई, कूड़े को हटाना व सड़क की सफाई की गई। साथ ही जेसीबी की मदद से दुकानों के आगे पक्के अतिक्रमण भी तोड़ा गया। ब्रास मार्केट में अवैध रूप से लगे अस्थाई बोर्ड, रेहड़ियों व खोखे को भी हटाया गया। जय गुरुदेव सामाजिक संस्था के लगभग 100 सदस्यों ने मिलकर ब्रास मार्केट में स्वच्छता अभियान को सफल बनाया।

रेवाड़ी। ब्रास मार्केट में सफाई करते जय गुरुदेव संस्था के सदस्य।

पर्यावरण संरक्षण का भी दिया संदेश

डीसी अभिषेक मीणा के निर्देशानुसार जिला नगर आयुक्त ब्रह्मप्रकाश के मार्गदर्शन में विभिन्न विभागों के नियुक्त नोडल अधिकारी निरंतर स्वच्छता अभियान की मॉनिटरिंग कर रहे है। जिले में अनेक जागरूकता गतिविधियां आयोजित कर आमजन की भागीदारी के साथ सफाई अभियान को बढ़ावा दिया जा रहा है। यदि कोई नागरिक कूड़ा ईधर उधर फेंकता दिखाई देता है, उस पर पूरी निगरानी रखते हुए कार्यवाही की जा रही है और सफाई के प्रति जागरूक किया जा रहा है। शहर को स्वच्छ बनाने की दिशा में सुधार के लिए अतिक्रमण भी हटवाया जा रहा है तथा कचरा फेंकने, पॉलीथिन का उपयोग करने तथा अतिक्रमण करने वालों के चालान भी किए जा रहे हैं। डीएमसी ब्रह्मप्रकाश ने कहा कि मुख्य सड़कों से लेकर बाजार, पार्कों व सार्वजनिक स्थानों पर साफ-सफाई अभियान चल रहा है। नगरपरिषद ईओ सुशील कुमार ने कहा कि मुहिम में पर्यावरण संरक्षण का संदेश भी दिया जा रहा है और स्वच्छता सार्वजनिक स्थलों पर अपनाने की शपथ भी दिलाई जा रही है।

रेवाड़ी। मार्केट में दुकानों के आगे अतिक्रमण तोड़ती जेसीबी। फोटो: हरिभूमि

रेवाड़ी। सफाई अभियान के दौरान मौजूद डीएमसी, अन्य अधिकारी व नागरिक।

साइबर क्राइम से बचने के उपाय बताए

- आईएमए महिला विंग ने किया साइबर सेफ्टी अवेयरनेस सेशन का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ⏭रेवाड़ी

इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के तत्वावधान में विमेन डॉक्टर्स विंग की ओर से महिला चिकित्सकों के लिए साइबर सेफ्टी अवेयरनेस सेशन का आयोजन किया। कार्यक्रम का उद्देश्य महिला चिकित्सकों को डिजिटल युग में सुरक्षित रखने के लिए आवश्यक ज्ञान और आत्मविश्वास प्रदान करना था। कार्यक्रम का नेतृत्व डा. गुंजन गोयल अध्यक्ष डब्ल्यूडीडब्ल्यू व डा. प्रज्ञा अग्रवाल सचिव डब्ल्यूडीडब्ल्यू ने किया।

रेवाड़ी। जागरूकता कार्यक्रम में मौजूद डीएसपी व डॉक्टर्स। फोटो: हरिभूमि

साइबर सेल विशेषज्ञ ने किया जागरूक

साइबर सेल विशेषज्ञ ने डॉक्टर्स को साइबर क्राइम से बचने के उपाय बताए। इस मौके पर मुख्यातिथि के रूप में डीएसपी डा. रविंद्र सिंह उपस्थित थे। साइबर विशेषज्ञ ने डॉक्टर्स से व्यावहारिक सुझाव साझा किए। उन्होंने कहा कि डिजिटल सुरक्षा भी उतनी ही आवश्यक है, जितनी शारीरिक स्वास्थ्य सुरक्षा। उन्होंने डॉक्टर्स को ऑनलाइन सुरक्षा के लिए उपाय व साइबर खतरों से निपटने के तरीके बताए। इस अवसर पर आईएमए अध्यक्ष डा. दीपक शर्मा, सचिव डा. मनीष तनेजा, आयोजन सचिव डा. कृतिका पांड, कोषाध्यक्ष डा. मनीष कुमार व उपाध्यक्ष डा. पवन गोयल सहित अनेक चिकित्सक मौजूद थे।

निर्माण सामग्री की गुणवत्ता पर फोकस रखें

- शहरी व ग्रामीण क्षेत्र की सड़कों का सुधारीकरण व नवीनीकरण जल्द किया जाएगा : डीसी

हरिभूमि न्यूज ⏭रेवाड़ी

डीसी अभिषेक मीणा ने कहा कि जिले में निकल रहे राष्ट्रीय व राज्य मार्ग के साथ ही शहरी व ग्रामीण क्षेत्र की सड़कों का सुधारीकरण व नवीनीकरण जल्द किया जाएगा। निर्माण एजेंसी के प्रतिनिधियों को बरसात के दौरान, जहां कहीं भी सड़क को नुकसान हुआ है, उसे तुरंत ठीक करने के आदेश दिए जा रहे हैं।

डीसी शनिवार को लघु सचिवालय सभागार में विभागीय अधिकारियों की बैठक ले रहे थे।

रेवाड़ी। लघु सचिवालय सभागार में अधिकारियों की बैठक लेते डीसी अभिषेक मीणा।

इससे पहले मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी वीसी के माध्यम से सड़कों के सुधार कार्य को लेकर डीसी ने से जिले की विकासात्मक गतिविधियों की जानकारी ली। डीसी अभिषेक मीणा ने कहा कि लोक निर्माण विभाग बी एंड आर, हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण, मार्केटिंग बोर्ड व शहरी निकाय के अधिकार क्षेत्र में आने वाली सड़कें गड्ढा मुक्त की जाए ताकि राहगीरों को राहत मिल सकें। उन्होंने कहा कि सड़कों की स्थिति सही करने के लिए विभागीय स्तर पर सजगता बरती जाए। सड़कों के सुधारीकरण व नवीनीकरण के दौरान निर्माण सामग्री की गुणवत्ता पर फोकस रखें और संपलिंग भी समयानुसार कराई जाए।

ये रहे मौजूद

डीसी ने अधिकारियों को विकासात्मक प्रोजेक्ट को निर्धारित अवधि में पूरा कराने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि सड़कों के सौंदर्यीकरण पर भी पूरा ध्यान दिया जाए। इस अवसर पर डीएमसी ब्रह्मप्रकाश, एक्सईन नगर परिषद अंकित वशिष्ठ, पंचायती राज विभाग के एक्सईन नरेंद्र गुलिया, एचएसवीपी एक्सईन अमित, डीआईपीआरओ दिनेश कुमार व लोक निर्माण विभाग के एसडीओ योगेश कुमार सहित अन्य विभागीय अधिकारी मौजूद थे।

विकास स्कूल में हर्षोल्लास से मनाया हिंदी दिवस

रेवाड़ी। महेंद्रगढ़ रोड पर स्थित विकास इंटरनेशनल स्कूल में शनिवार को हिंदी दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस दौरान छात्र-छात्राओं ने कविता पाठ, भाषण और हिंदी क्विज प्रतियोगिता में बढ़-चढ़कर भाग लिया। इस मौके पर प्रधानाचार्य भीम सिंह ने कहा कि हिंदी भारत में सबसे अधिक और विश्व में दूसरे नंबर पर बोली जाने वाली भाषा है। आज हिंदी और संस्कृत पढाने के लिए विदेशों में भी विश्वविद्यालय खोले जा रहे हैं। स्कूल चेयरमैन देवेंद्र यादव ने विद्यार्थियों को हिंदी दिवस की शुभकामनाएं दी। इस मौके पर स्कूल के सभी स्टाफ सदस्य मौजूद थे।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
रेवाड़ी कार्यालय : दुकान नंबर 67, दुर्गा मार्केट, सेक्टर-1 वाला कच्चा रास्ता, नजदीक महाराणा प्रताप चौक, बावल रोड, रेवाड़ी सम्पर्क करें: 8053076211, 8295738500, 9253681005

मिड-डे मील कार्यकर्ताओं ने जताया रोष

- मंच संचालन यूनियन की जिला सचिव मुनेश सुमाखेड़ा ने किया

हरिभूमि न्यूज ⏭रेवाड़ी

केंद्रीय श्रमिक संगठन एआईयूटीयूसी से संबंधित मिड-डेमील कार्यकर्ता यूनियन कीबैठक नेताजी सुभाष चंद्र बोस पार्क में आयोजित हुई, जिसमें जिले भर से सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। बैठक की अध्यक्षता जिला प्रधान भतेरी अलावलपुर ने की और मंच संचालन यूनियन की जिला सचिव मुनेश सुमाखेड़ा ने किया। एआईयूटीयूसी के जिला सचिव कॉमरेड शेरसिंह मीरपुर ने कहा कि मिड-डे मील कर्मी बेहद गरीब परिवारों से हैं, जिनमें काफी विधवा महिलाएं है, जिनकों 7000 रुपये महीना मानदेय मिलता है, जोकि हरियाणा में लागू न्यूनतम वेतन के बराबर भी नहीं है। यूनियन की प्रधान भतेरी देवी ने कहा कि सभी कर्मी स्कूल में पूरे दिन काम करते हैं, परंतु बहुत कम पैसा मिलता है। वर्दी के केवल 600 सालाना मिलते है, जोकि कम से कम 2000 होने चाहिए।

रेवाड़ी। सुभाष पार्क में मांगों को लेकर नारेबाजी करती मिड-डेमील कार्यकर्ता। फोटो: हरिभूमि

26 सितंबर को जिला स्तर पर प्रदर्शन

यूनियन की जिला सचिव मुनेष ने सरकार से मिड-डेमील कर्मियों के रिटायरमेंट पर 5 लाख की आर्थिक सहायता देने व रिटायरमेंट की आयु सीमा 65 वर्ष करने की मांग की। एआईयूटीयूसी के जिल उप प्रधान पूर्व मुख्य अध्यापक हरिओम ने यूनियन को मजबूत करने पर बल दिया। बैठक मे सर्व सम्मति फैसला लिया गया कि मांगों को जल्द नहीं माना गया तो 26 सितंबर को जिला स्तर पर प्रदर्शन करेंगे। मौके पर सुमन बुड़ाना, सुनीता अहरोद, भतेरी पाल्हावास, सविता करनावास, सरोज सुलखा, मुनेश भाड़ावास, प्रमेश कमालपुर, शीला गुरावड़ा, बबली जाट भूरथल, गंगा देवी जाटूसाना, राजबाला लाला, बीना मोहदीनपुर, शर्मिला कतोपुरी, लीलावती आसिया की गोरावास, शकुंतला, शीला चांदावास, सुषमा जाटूवास, संतोष लिसान, सविता डूंगरवास, शीला हुसैनपुर, संतोष मुंडलिया, कमलेश खोल व निर्मला रोहड़ाई सहित सैकड़ों कार्यकर्ता मौजूद थी।

रेवाड़ी। भगत सिंह का सम्मान करते संगठन के सदस्य। फोटो: हरिभूमि

भगतसिंह का किया सम्मान

रेवाड़ी। सामाजिक संगठन सेवा स्तम्ब जिला इकाई के प्रधान भगतसिंह बोद्ध का संगठन की सेंट्रल एग्जीक्यूटिव कमेटी के विस्तारीकरण में हरियाणा राज्य से एकमात्र सीनियर वाइस प्रेसिडेंट के पद पर चयन किया गया है। शनिवार को डा. बीआर अंबेडकर लाइब्रेरी एवं पार्क मॉडल टाउन में संगठन के पदाधिकारियों ने भगतसिंह का सम्मान किया। उन्होंने राष्ट्रीय अध्यक्ष एमएल भंडारी, जनरल सेक्रेटरी डीआर शोरी, वित सचिव मनीराम एवं सीएल राजन सहित शीर्ष नेतृत्व का आभार प्रकट किया। मौके पर आचार्य काशीराम खींची, एडवोकेट राज कुमार जलवा, आरपी सिंह दहिया, सुबे सिंह रेवाड़ियि, रामनिवास गोठवाल, सत्यवीर गोठवाल, होशियार सिंह अहरोदिया, नरेंद्र मेहरा, सत्यप्रकाश नैचाना, राजेश सुलखा व सुमित रेवाड़ियि सहित काफी प्रबुद्धजन उपस्थित थे।

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।

हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 सें.मी 10X 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 1500/- रु. 2000/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
रेवाड़ी : दुकान नंबर 67, दुर्गा मार्केट, नजदीक महाराणा प्रताप चौक, बावल रोड, रेवाड़ी फोन : 9653537253, 9671434260

अभियान में सैकड़ों एनएसएस स्वयंसेवकों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया

आईजीयू में एनएसएस इकाई के पौधरोपण अभियान में अनेक प्रजाति के पौध लगाए

कार्यक्रम का शुभारंभ विवि के कुलपति प्रोफेसर असीम मिगलानी ने किया

हरिभूमि न्यूज ⏭रेवाड़ी

इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय मीरपुर की एनएसएस इकाई की ओर से विश्वविद्यालय परिसर में पौधारोपण अभियान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर असीम मिगलानी ने किया।

कुलपति प्रोफेसर असीम मिगलानी ने जीवन में पेड़-पौधों के महत्व को अंकित करते हुए सभी विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे एक-एक पौधा अवश्य लगाएं एवं पौधा लगाने के साथ-साथ उसकी देखभाल का भी संकल्प ले ताकि पर्यावरण को स्वच्छ बनाया जा सकें। इस अवसर पर अधिष्ठाता शैक्षणिक मामले प्रोफेसर सुनील कुमार, अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रोफेसर करण सिंह, प्रोफेसर दीपक गुप्ता, प्रोफेसर सतीश कुमार व एडवोकेट राकेश कुमार खोला उपस्थित थे। अधिवक्ता राकेश ने विवि परिसर को हराभरा बनाने के उद्देश्य से 50 से अधिक पौधों का योगदान दिया। इस दौरान सभी ने उत्साह से कार्यक्रम में भाग लिया।

रेवाड़ी। आईजीयू में पौधरोपण करते कुलपति व स्टाफ सदस्य। फोटो: हरिभूमि

इन सभी ने अभियान में दिया योगदान

कार्यक्रम का संचालन एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी डा. प्रियंका रंगा, डा. अनीता, डा. संदीप कुमार एवं डा. अमनदीप के नेतृत्व व एनएसएस कार्यक्रम समन्वयक डा. मुकेश कुमार के मार्गदर्शन में किया गया। अभियान में सैकड़ों एनएसएस स्वयंसेवकों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। सभी स्वयंसेवकों ने परिसर में विभिन्न प्रजातियों के पौधे लगाए, जिनमें छायादार एवं पर्यावरण शुद्ध करने वाले पौधे प्रमुख रहे। डा. वीरेंद्र, डा. बलजीत, डा. सुनील, मंजीत कुमार व अंकित सहित सभी स्टाफ सदस्यों ने अभियान में योगदान दिया।

ई-क्षतिपूर्ति पोर्टल पर कल तक रजिस्ट्रेशन कर सकते हैं किसान

रेवाड़ी। सरकार की ओर से अधिक वर्षा या जलभराव से किसानों की फसलों में होने वाले नुकसान की भरपाई के लिए क्षतिपूर्ति पोर्टल खोल दिया गया हैं और किसान अपनी फसल खराबे की जानकारी अपलोड कर सकते हैं। डीसी मीणा ने बताया कि जिन गांवों में किसानों की फसल खराब हुई है, वे किसान अपनी फसल खराबे की भरपाई के लिए क्षतिपूर्ति पोर्टल पर 15 सितंबर तक रजिस्ट्रेशन करा सकते हैं। उन्होंने बताया कि जिला राजस्व अधिकारियों द्वारा ई-क्षतिपूर्ति पोर्टल पर प्राप्त दावों का विशेष गिरदावरी के रूप में सत्यापन किया जाएगा और आकलन के आधार पर निर्धारित मानकों के अनुसार मुआवजा जारी किया जाएगा।

विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली तीसरी भाषा हिंदी की जड़ें प्राचीन भारतीय आर्य भाषा परिवार की है, जिसकी जननी संस्कृत है। संस्कृत, जिसे 'देववाणी' भी कहा जाता है। इसकी विशिष्टताओं ने हिंदी को आज विश्व के कोने-कोने तक पहुंच दिया है। अगर इसके प्रसार के लिए कुछ और प्रयास किए जाएं तो निस्संदेह इसका वर्चस्व और भी बढ़ेगा।

भारत की आत्मा है हिंदी

आवरण कथा / भूपेंद्र शर्मा

आज हिंदी भाषा भारत तक सीमित नहीं है। यह विश्व भर में एक सशक्त पहचान बना चुकी है। दुनिया के कई देशों में लाखों लोगों द्वारा बोली जाती है। भारत की आधिकारिक भाषा के रूप में, हिंदी सीखने से भारतीय आबादी के एक बड़े हिस्से के साथ संवाद एवं जुड़ने का अवसर मिलता है। भारत की विविध संस्कृति, जीवंत अर्थव्यवस्था तथा समृद्ध विरासत हिंदी को यात्रा, कार्य एवं सांस्कृतिक खोज के लिए एक श्रेष्ठ माध्यम बनाती है। वैश्विक अर्थव्यवस्था में भारत के बढ़ते प्रभाव के कारण हिंदी में कुशल पेशेवरों की मांग बढ़ रही है। कई बहुराष्ट्रीय कंपनियां, विशेष रूप से जिनके भारत में निर्माण, उत्पादन कार्य या ग्राहक हैं, उन कर्मचारियों को महत्व देती है, जो हिंदी में प्रभावी ढंग से संवाद कर सकते हैं। हिंदी सीखना करियर की संभावनाओं को बढ़ा सकता है, खासकर अंतरराष्ट्रीय व्यापार, पर्यटन, पत्रकारिता, अनुवाद एवं कूटनीतिक सेवाओं जैसे क्षेत्रों में।

क्षेत्रीय भाषाओं का प्रवेश द्वार

हिंदी का विकास कई चरणों में हुआ। अपभ्रंश से होते हुए, इसने अपनी वर्तमान पहचान बनाई। मध्यकाल में खड़ी बोली के रूप में इसने अपनी नींव रखी, जो आगे चलकर आधुनिक हिंदी का आधार बनी। हिंदी भारत में बोली जाने वाली विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं को समझने एवं सीखने के लिए एक प्रवेश द्वार की तरह है। बंगाली, मराठी, गुजराती एवं पंजाबी सहित कई भारतीय भाषाएं व्याकरण, शब्दावली तथा लिपि के मामले में हिंदी के साथ समानताएं साझा करती हैं।

फिल्म उद्योग तक पहुंच

भारतीय फिल्म उद्योग में प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में फिल्मों का निर्माण होता है, जिन्हें भारत में ही नहीं, विश्व के अनेक देशों में देखा जाता है। हिंदी सिनेमा की विश्व में अद्भुत लोकप्रियता है। विदेशों में हिंदी के प्रसार में हिंदी फिल्मों का बड़ा योगदान है। हिंदी फिल्में, हिंदी गीत एवं टीवी शो की जीवंत दुनिया हिंदी सीखने वालों के लिए बड़ा सरल माध्यम है। वहीं इनके माध्यम से विश्वभर में फैले भारतीय प्रवासियों के साथ भारत एवं भारतीय संस्कृति के अटूट, मधुर संबंध स्थापित होते हैं। इसीलिए हिंदी को भारत की आत्मा कहते हैं।

विश्व में 61 करोड़ हिंदी भाषी

वर्ल्ड लैंग्वेज डेटाबेस के अनुसार, हिंदी भाषा वर्तमान समय में 61 करोड़ लोगों द्वारा बोली जाती है। विश्व हिंदी सचिवालय मॉरीशस में स्थित है। यह सचिवालय हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए 11 फरवरी 2008 से कार्यरत है। हिंदी भाषा को बढ़ावा देने के लिए समय-समय पर अखिल भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलनों का आयोजन किया जाता है।

राजभाषा विभाग के प्रयास

सन 2019 से सभी 59 मंत्रालयों में हिंदी सलाहकार समितियों का गठन किया गया। अब तक कुल 528 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन भी किया जा चुका है। विदेशों में भी लंदन, सिंगापुर, फिजी, दुबई एवं पोर्ट-लुई में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियां बनाई गई हैं। भारत ने संयुक्त राष्ट्र में हिंदी भाषा के उपयोग को बढ़ावा देने की भी पहल की है। पहला अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन बनारस में 13-14 नवंबर, 2021 को तथा 14 सितंबर 2022 को सूरत में दूसरा सम्मेलन आयोजित किया गया। इस साल पुणे में तीसरा अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। विभाग ने कुल 90 हजार शब्द का एक 'ई-महाशब्दकोष' मोबाइल एप तथा लगभग 9 हजार वाक्य का 'ई-सरल' वाक्यकोष भी तैयार किया है।

हिंदी की विशिष्टताएं

देवनागरी लिपि: हिंदी देवनागरी लिपि में लिखी जाती है, जो देखने में मनमोहक और ध्वन्यात्मक रूप से सटीक है। इसमें 11 स्वर एवं 33 व्यंजन हैं, जिनमें प्रत्येक ध्वनि का अलग स्वर एवं उच्चारण है।

स्वर की लंबाई: हिंदी में कुछ स्वर ध्वनियों का उच्चारण विस्तारित अवधि के साथ किया जा सकता है, जिससे शब्दों का अर्थ बदल जाता है। उदाहरण के लिए, 'मा' का अर्थ 'मां' है, जबकि 'मान' का अर्थ 'सम्मान' है।

मानद रूप: हिंदी व्यक्तियों को सम्मानपूर्वक संबोधित करने के लिए मानद रूपों को शामिल करती है। बड़ों, सम्मानित व्यक्तियों या उच्च सामाजिक स्थिति वाले व्यक्तियों से बात करते समय सम्मानजनक सर्वनामों, क्रिया रूपों एवं वाक्य संरचनाओं का उपयोग भाषा के सांस्कृतिक प्रभाव को सम्मान एवं शिष्टाचार के साथ प्रदर्शित करता है।

लिंग वाली संज्ञा: हिंदी में संज्ञाओं के तीन लिंग हैं। पुल्लिंग, स्त्रीलिंग एवं नपुंसकलिंग। एक संज्ञा का लिंग अकसर विशेषणों, क्रियाओं तथा सर्वनामों के समझौते को निर्धारित करता है, जो इसके साथ उपयोग किए जाते हैं।

सर्वनाम का अंतर: हिंदी एकवचन के लिए औपचारिक एवं अनौपचारिक सर्वनामों के बीच अंतर करती है। औपचारिक सर्वनाम 'आप' का प्रयोग सम्मान दिखाने या उच्च पदस्थ व्यक्ति को संबोधित करने के लिए किया जाता है, जबकि अनौपचारिक सर्वनाम 'तुम' का प्रयोग समान सामाजिक स्थिति वाले व्यक्तियों के साथ किया जाता है।

जटिल क्रिया प्रणाली: हिंदी की क्रिया प्रणाली में विभिन्न क्रिया रूप एवं काल हैं। क्रियाओं का संयोजन तनाव, पहलू, मनोदशा एवं विषय के साथ समझौते जैसे कारकों से प्रभावित होता है, जिससे भाषा की क्रिया संरचना जटिल तथा अभिव्यंजक हो जाती है।

संस्कृत का प्रभाव: हिंदी पर संस्कृत का गहरा प्रभाव है। कई हिंदी शब्दों की उत्पत्ति संस्कृत से हुई है, जो शब्दावली को समृद्ध करती है तथा भारत की प्राचीन सांस्कृतिक एवं दार्शनिक परंपराओं के साथ गहरा संबंध प्रदान करती है।

ध्वनि विविधता: हिंदी में ध्वनियों की एक विस्तृत शृंखला है, जिसमें स्वर, व्यंजन एवं नासिक्य ध्वनियां हैं। इसकी ध्वन्यात्मक सूची विविध मधुर उच्चारण प्रवाहित करती है।

क्षेत्रीय विविधता: भारत के विभिन्न हिस्सों में हिंदी की विभिन्न क्षेत्रीय बोलियां तथा शैली है। प्रत्येक क्षेत्र की अपनी शब्दावली, उच्चारण एवं व्याकरणिक विविधताएं हैं, जो हिंदी भाषी जनमन के भीतर भाषाई विविधता को दर्शाती हैं।

अभी अधूरा है विकास

हिंदी अपनी वैश्विक पहचान रखती है, किंतु इसके विकास के लिए अभी भी बहुत कुछ किया जाना शेष है।

तकनीकी विकास: हिंदी में तकनीकी शब्दावली को अधिक विकसित करने की आवश्यकता है, ताकि विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं इंजीनियरिंग जैसे क्षेत्रों में इसका उपयोग बढ़ सके।

मानकीकरण एवं सरलता: बोल-चाल एवं लेखन में एकरूपता लाने के लिए मानकीकरण को बढ़ावा देना आवश्यक है।

सरकारी प्रोत्साहन: सरकार को हिंदी के उपयोग को सभी क्षेत्रों में बढ़ावा देना चाहिए, विशेषकर शिक्षा एवं प्रशासनिक कार्यों में।

वैश्विक मंचों पर उपयोग: अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं में हिंदी को आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता दिलाने के प्रयास होने चाहिए। *

हिंदी दिवस और संविधान में स्थान

हिंदी दिवस मनाने का इतिहास भारत के स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ा है। 14 सितंबर 1949 को, भारतीय संविधान सभा ने हिंदी को भारत की आधिकारिक भाषा के रूप में अपनाया। यह निर्णय हिंदी को राष्ट्र की एकता के सूत्र के रूप में स्थापित करने के लिए लिया गया था। पहला हिंदी दिवस 1953 में मनाया गया। यह दिन हमें भाषा के महत्व और उसके संरक्षण की याद दिलाता है। भारतीय संविधान के भाग-17 में अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा संबंधी उपबंध हैं। अनुच्छेद 120 (संसद में प्रयोग की जाने वाली भाषा) भाग 17 में अनुच्छेद 348 के उपबंधों के अधीन रहते हुए, संसद में कार्य हिंदी में या अंग्रेजी में किया जाएगा। अनुच्छेद 343 (संघ की राजभाषा) संघ की राजभाषा हिंदी एवं लिपि देवनागरी होगी, संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतरराष्ट्रीय रूप होगा।

विचारणीय / लोकमित्र गौतम

इसे विडंबना ही कहना चाहिए कि जिस हिंदी को बोलने, जिसमें मनोरंजन करने में युवा पीढ़ी खूब आनंद लेती है, उसे ही लिखने और पढ़ने में असहज रहती है। हालांकि इसके लिए सिर्फ वही नहीं जिम्मेदार है। ऐसे में इस समस्या के निराकरण के लिए परिवार, समाज से लेकर व्यवस्था तंत्र को भी विचार करना होगा।

हिंदी को लेकर सहज नहीं युवा पीढ़ी

भारत की कुल आबादी में से 65 फीसदी से ज्यादा युवा हैं, जिनकी उम्र 35 साल या इससे कम है। इनमें से 60 से 65 फीसदी युवा फर्राटे से हिंदी बोलते-समझते हैं। ये आमतौर पर हिंदी फिल्में भी देखते हैं और ओटीटी प्लेटफॉर्म पर भी हिंदी के कार्यक्रम चाव से देखते हैं। मगर इनकी एक ऐसी कमजोरी है, जिस पर आम लोगों का यकायक ध्यान नहीं जाता। इनमें से करीब आधे युवा ऐसे हैं, जो हिंदी बोलते हैं, समझते हैं, लेकिन प्रवीणता से हिंदी पढ़ और लिख नहीं पाते। कुछ पढ़ते भी हैं तो सहजता से शुद्ध-शुद्ध नहीं पढ़ पाते।

आधी युवा आबादी है असहज: देश में हिंदी बोलने वाले करीब आधे युवा हिंदी में कतई सहज नहीं है। ऊपर से देखने में यह कोई बहुत बड़ी समस्या नहीं लगती। यहां तक कि हिंदी भाषी मां-बाप को भी अपने हिंदी लिख और पढ़ न पाने में असहज बच्चों से किसी तरह की भावनात्मक परेशानी नहीं होती, लेकिन सच बात यह है कि हिंदी की सबसे कमजोर कड़ी यही युवा पीढ़ी है, जो ऊपर से तो हिंदी में बहुत सहज दिखती है, मगर भीतर से हिंदी को लेकर बिल्कुल असहज है। दरअसल, यही वह पीढ़ी है, जो अप्रत्यक्ष रूप में हिंदी को मौखिक भाषा तक सीमित करने में लगी है।

शैक्षिक-सांस्कृतिक विडंबना: यह सचमुच हिंदी के साथ बड़ी भाषाई विडंबना है, क्योंकि हिंदी बोलने वाले, हिंदी पढ़ने वाले, हिंदी में मनोरंजन करने वाले युवा बाहरी तौर पर यह प्रभाव देते हैं कि जैसे वो हिंदी सेवी हों। पर वास्तव में वो हिंदी सेवी नहीं होते। दक्षिण भारत में खासकर बेंग्लुरु, चेन्नई में जिन उत्तर भारतीय युवाओं की पहचान हिंदीभाषी होने से है, वास्तव में ये हिंदीभाषी समझे जाने वाली युवा पीढ़ी का बड़ा हिस्सा भी उन्हीं की तरह हिंदी में असहज है। भले यह बाहरी तौर पर हिंदी वाले लगते हों, पर सचमुच में ये हिंदी वाले नहीं हैं, हिंदी को इनसे फायदा कम, नुकसान ज्यादा होता है, क्योंकि हिंदी बोलना, हिंदी में बातें करना, हिंदी में मनोरंजन करना, लेकिन हिंदी लिख और पढ़ न पाना या इसमें सहज न हो पाना, सिर्फ भाषाई समस्या नहीं है। यह सांस्कृतिक और शैक्षिक त्रासदी भी है।

नहीं है हिंदी की गहरी समझ: दक्षिण या पश्चिम भारत के बड़े शहरों में ही नहीं बल्कि उत्तर भारत के भी बड़े शहरों में ऐसे युवाओं की भरमार है। दिल्ली में भी 25 से 30 फीसदी ऐसे युवा हैं, जो बस हिंदी में बातें करते हैं, गाने सुनते हैं, वेब सीरीज देखते हैं, लेकिन सौ शब्दों का आवेदनपत्र हिंदी में नहीं लिख सकते। घंटों हिंदी में बहस करने वाले उस विषय पर एक पेज भी हिंदी में नहीं लिख पाते। यह इसलिए बड़ी समस्या है कि इससे हिंदी की असली समस्या पर पर्दा पड़ा रहता है। यह भ्रम बना रहता है कि हिंदी, बोलने, जानने और समझने वाले बहुत बड़ी तादाद में लोग हैं। लेकिन यह ऐसी ढोल के भीतर पोल वाली खोखली पीढ़ी है, जो न तो हिंदी का साहित्य जानती है, न कविता जानती है, न हिंदी के अखबार पढ़ती है और न ही हिंदी के ऐतिहासिक दस्तावेजों से ही इसका कोई परिचय है। ऐसे में भला यह पीढ़ी हिंदी का कैसे भला करेगी? यह तो उल्टा हिंदी में रह कर ही हिंदी को कमजोर करती है।

पहचान होती है मातृभाषा: अगर आप ऐसी पृष्ठभूमि से आते हैं कि आपके घर की भाषा यानी मातृभाषा हिंदी है और पढ़ाई और कामकाज की भाषा अंग्रेजी है, तो भले रोज के कामकाजी घंटों में आपको यह खुशफहमी रहती हो कि अपनी कमजोर हिंदी को लेकर आपमें किसी तरह की असहजता नहीं है, लेकिन वास्तविकता यह होती है कि अगर हम अपनी मातृभाषा को पढ़ने और लिखने में सहज नहीं होते तो हमारे अंदर एक स्वतः जन्मी हीन भावना हर समय रहती है। जो लोग अपनी मातृभाषा को सही से लिखना, पढ़ना नहीं जानते, उन्हें अपनी दुनिया के सांस्कृतिक और सामाजिक संदर्भों का भी पता नहीं होता। दिन रात अंग्रेजी पढ़ने वाले ज्यादातर भारतीय अंग्रेजी के मुहावरों, उसकी लोकोक्तियों में मौजूद गहरे सांस्कृतिक संदर्भों से कभी नहीं जुड़ पाते, इसलिए बहुत सी बातों को वो कभी भी गहराई से समझ नहीं पाते। हमें लिपि की कठिनाई का बहाना बनाकर अपनी भाषा से नहीं कटना चाहिए। एक बार अगर हम अपनी भाषा से कट गए, तो हम अपनी स्मृतियों से, पीढ़ीगत धरोहरों से और साहित्यिक विरासत से भी कट जाते हैं।

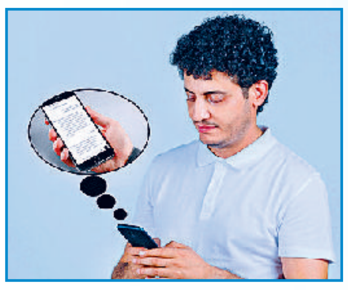

डिजिटल जीवनशैली का प्रभाव: इसमें आज की डिजिटल लाइफस्टाइल और बाहर के देशों से आने वाली तकनीकी का भी हाथ है। लेकिन इस आरोप से तो हम अपनी भाषा के साथ लगाव न रख पाने को सही नहीं ठहराते। माना कि डिजिटल युग में मोबाइल और सोशल मीडिया में रोमन लिपि में लिखे, पढ़े जाने का चलन है, जिससे देवनागरी की प्रैक्टिस खत्म होती है। लेकिन यह यूं ही स्वतः नहीं पैदा हो गया। इस स्थिति के पैदा होने में बकायदा सांस्कृतिक संदर्भों का योगदान है। आज जिस तकनीक का आप अपने जीवन में इस्तेमाल कर रहे हैं, वह किसी हिंदी भाषी ने नहीं विकसित की, वह इस तकनीक को हिंदी के अनुकूल क्यों विकसित करता? अतः हिंदी के साथ अपने सहज और आत्मीय रिश्ते आपको खुद ही रखने है, इसके लिए किसी तकनीकी कमी या उसके संकट को बहाना नहीं बना सकते। *

व्यंग्य / सूर्य कुमार पांडेय

हिंदी से हमें आशा है। हिंदी हमारी राजभाषा है। इसके स्मरण मात्र से पुलकित हो उठता हमारा अंग-अंग है। हिंदी हमारी मदर टंग है। मैं कहां तक करूं हिंदी की महिमा का बखान? हिंदी है सूर, तुलसी, मीरा, रसखान। इसीलिए हम इसकी पूजा करते हैं।

हिंदी हमारी मदर टंग है

मुझे हिंदी दिवस के एक कार्यक्रम में जाना पड़ा। मैं जैसे ही माइक के सामने हुआ खड़ा, आयोजक ने कहा, 'आज आपको हिंदी पर एक कविता जरूर सुनानी है।'

मैंने कहा, 'तो सुनिए, जो हिंदी की कहानी है। हिंदी समस्त भारतीय भाषाओं की रानी है। हिंदी का बड़ा सम्मान है। यह हमारी आन-बान-शान है। इस पर हमें गर्व है, दर्प है, अभिमान है। क्योंकि हिंदी महान है।

हिंदी से हमें आशा है। हिंदी हमारी राजभाषा है। इसके स्मरण मात्र से पुलकित हो उठता हमारा अंग-अंग है। हिंदी हमारी मदर टंग है। मैं कहां तक करूं हिंदी की महिमा का बखान? हिंदी है सूर, तुलसी, मीरा, रसखान। इसीलिए हम इसकी पूजा करते हैं। वर्ष भर पूजाघरों में मूर्तिवत सजाकर-संवार कर धरते हैं। इस भाषा में नहीं है कोई खोट। इसे साल के बाकी दिनों में तलाशो तो हिंदी वैसे ही मिला करती है, जैसे किसी माफिया के पूजाघर में रखे हुए नंबर दो के करेंसी नोट।

हिंदी हमारी अभिलाषा है। यह हमारी राजभाषा है। इसलिए इसकी पूजा करना हमारी मजबूरी है। जैसे आज की सियासत में अशालीन होना जरूरी है।

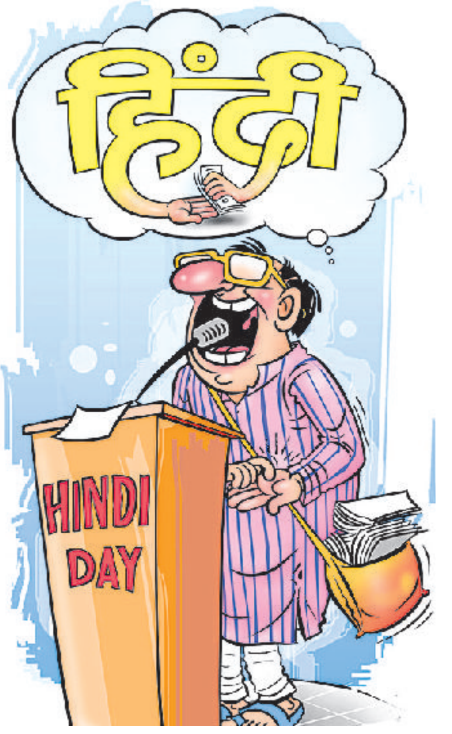

हिंदी का बड़ा महत्व है। हिंदी से हमें ममत्व है। हिंदी हमारे लिए वैसे ही है, जैसे गांव वालों के लिए मेला, जैसे मजदूरों के लिए ठेला और रैली में रेला। हिंदी हमारी शोभा है, हमारा अलंकार है। हिंदी हमारा अंतिम प्यार है। हिंदी का नाम लेते ही हमारे अधरों पर फूल खिलते हैं। हिंदी हमारे लिए इसलिए भी प्यारी है

क्योंकि हिंदी में मांगों तो वोट भी आसानी से मिलते हैं। इसीलिए तो हर राजनेता हिंदी के साथ दिखता है। अहिंदी भाषी सियासतदान भी हिंदी सीखता है।

हिंदी पर अब और कितना सुनाऊं मेरे भाई? हिंदी हमारे भाल की बिंदी है, और लोग हैं कि इतनी-सी बात समझ पाते नहीं कि मर्द बिंदी लगाते नहीं। तो आधी आबादी को छूट, बच गई आधी तो उसको भी है आजादी कि फैशन से फुर्सत हो तो बिंदी लगाएं। इस विदेशी कल्चर की क्यारी में हम कैसे हिंदी का प्लांट लगाएं? कहिए, आयोजक जी, अभी भी आपका मन नहीं भरा हो तो हम हिंदी पर और भी सुनाएं।'

आयोजक बोला, 'अब आप कृपापूर्वक जाएं और नेक्स्ट ईयर अगेन हिंदी पर ऐसी ही एक नई कविता लिखकर अवश्य लाएं।' *

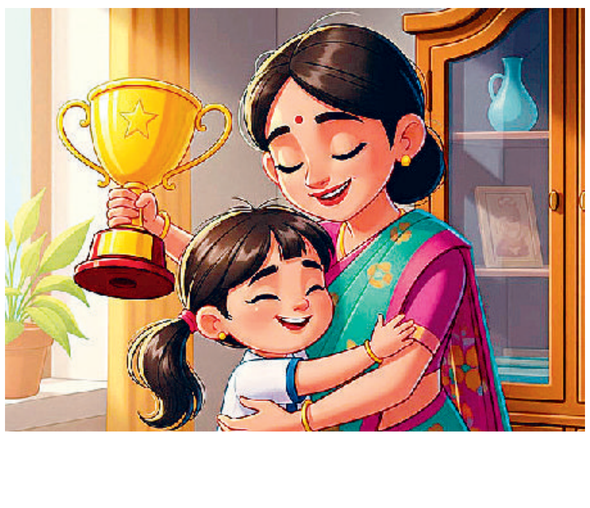

लघुकथा / शीला श्रीवास्तव

हिंदी बनाम इंग्लिश

रिया बहुत देर से अपने कमरे में चहलकदमी कर रही थी। नमिता ने पूछा, 'क्या बात है बेटी, क्यों परेशान हो?'

'मेरे स्कूल में पैरेंट्स मीटिंग है, और पापा घर पर नहीं हैं।' रिया खीझे स्वर में अपनी मम्मी से बोली।

'अरे तो क्या हुआ? मैं हूं ना। मैं चलती हूं पैरेंट्स मीटिंग में।' मां बोलीं।

'आप तो रहने ही दें। आपको इंग्लिश बोलना कहां आती है? आप आएंगी तो मेरा स्कूल में मजाक ही बनेगा।' रिया का जवाब सुनकर मां स्तब्ध रह गई। इस बात के लिए वह अकसर अपने पति से भी खरी-खोटी सुनती थी, आज बेटी ने भी सुना दिया। कुछ दिनों बाद स्कूल में हिंदी दिवस के अवसर पर एक प्रतियोगिता का आयोजन होने वाला था, जिसका शीर्षक था, 'हिंदी बनाम इंग्लिश।' रिया जानती थी, मम्मी की हिंदी पर बहुत अच्छी पकड़ है। उसने पहले मम्मी से अपने पिछले बर्ताव के लिए मांफी मांगी फिर बोली, 'मम्मी, प्लीज आप मेरे लिए एक स्पीच लिख कर दे दीजिए।' मां पूरे मनोयोग से स्पीच लिखने में जुट गई। उसकी मेहनत रंग लाई। रिया को प्रथम पुरस्कार मिला। स्कूल से आते ही रिया अपनी मम्मी के गले लग गई, बोली, 'आपके लिखे स्पीच ने आज मुझे स्कूल में फेमस कर दिया। यू आर ग्रेट मम्मी! यह पुरस्कार मैं आपको समर्पित करती हूं।'

अपनी बेटी की नजरों में अपने लिए सम्मान देख मां की आंखें खुशी से छलक आईं। *

इंजेक्शन की नवीन तकनीक से स्पाइन रोगों का उपचार

सर्जरी के बिना ही सिर्फ इंजेक्शन तकनीक के जरिये स्पाइन (रीढ़) रोगों का बेहतर और विश्वसनीय उपचार विश्वविख्यात डॉ. प्रमोद पहारिया द्वारा ग्वालियर में हो रहा है। आईये जानते हैं इस तकनीक के असाधारण लाभ–

मुख्यमंत्री मध्यप्रदेश ने डॉ. प्रमोद पहारिया को प्राईड ऑफ एम.पी. अवार्ड दिया।

इस ट्रीटमेंट की कितनी बार आवश्यकता होती है?
सिर्फ एक ही बार पर्याप्त है।

सर्जरी की अपेक्षा इस तकनीक के क्या फायदे हैं?
सर्जरी के दौरान पैरालिसिस, पैलाप्लेजिया, ब्लैडर एवं बोवेल के कंट्रोल में क्षति, पैरों में कमजोरी, इंफेक्शन, इंप्लांट फैलियर जैसे जो कॉम्पिलकेशन देखने को मिलते हैं, वैसा इसमें खतरा नहीं है।

किन मरीजों का इलाज इस तकनीक से संभव है?
डिस्क प्रोलेप्स जैसे L4-L5, L5-S1, साइटिका, लंबर या सर्वाइकल रेडीक्युलोपैथी, डिजनरेटिव डिस्क, फैसिट जॉइन्ट सिंड्रोम, माइलोपैथी, लंबर कैनाल स्टेनोसिस, स्पॉन्डिलाइटिस आदि में कारगर है।

जो रोगी ऑपरेशन करवा चुके हैं उसमें भी यह कारगर है ?
यदि ऑपरेशन के बाद दबाव बना रहता या दोबारा दबाव आ जाता है तो उसमें भी यह तकनीकी कारगर है।

किस उम्र के लिये यह चिकित्सा है?
15 से 85 वर्ष के मरीजों के लिये।

एक डिस्क लेवल के ट्रीटमेंट में कितना खर्च आता है?
स्पाइन सर्जरी में जहां 3 लाख तक का खर्चा आता है वहीं यह उपचार मात्र 20000 तक में हो जाता है। विदेशों में इसका खर्च 50 गुना तक है।

कितने समय में रोगी घर जा सकता है?
एक घण्टे बाद ही घर जा सकता है। जबकि सर्जरी में 3 माह तक रोगी को अपने काम से अलग रहकर आर्थिक क्षति उठाना पड़ती है।

इस ट्रीटमेंट की सफलता की दर कितनी है?
90 से 95% सफल है। अब तक लगभग 7,500 मरीज हमेशा के लिए ठीक हो चुके हैं। यह इंजेक्शन प्रॉब्लम साइट में लगाया जाता है।

इस ट्रीटमेंट का असर कब तक रहता है?
इसमें जड़ से इलाज होता है।

क्या यह स्टेरॉइड इंजेक्शन है?
नहीं, यह एक भ्रम है। यह एक सेफ अमेरिकन प्रोसीजर है, जो एक **विशेष मशीन** की निगरानी में किया जाता है।

NBC@

डॉ. प्रमोद पहारिया
स्पाइन सर्जन
MBBS, D.Ortho, DNB, M.Ch. (Ortho)
पूर्व सर्जन– सर गंगाराम हॉस्पिटल एवं इंडियन स्पाइनल इंज्यूरी सेन्टर, नई दिल्ली

देहली हॉस्पीटल, ओल्ड श्री टॉकीज, बारादरी, मुरार, ग्वालियर (म.प्र.)
समय: दोपहर 12 बजे से 3 बजे तक
व्हाट्सएप पर रिपोर्ट भेजकर ही संपर्क करें
सम्पर्क – 7354858466
www.nonsurgicalspinecentre.in

स्पेशलः इंजीनियर्स डे, 15 सितंबर

पिछली सदी में हुए भारत के महान सिविल इंजीनियर एम. विश्वेश्वरैया की जयंती को इंजीनियर्स डे के रूप में मनाते हैं। इस अवसर पर हम आपको बता रहे हैं देश के अलग-अलग इलाकों में स्थित कुछ ऐसे निर्माणों के बारे में, जो इंजीनियरिंग की शानदार मिसाल पेश करते हैं। इनकी विशेषताओं के बारे में जानकर आप अचरज किए बिना नहीं रह पाएंगे।

देश में कई जगह मौजूद हैं इंजीनियरिंग के गौरवशाली प्रतीक

चिनाब पुल जम्मू-कश्मीर के रियासी में

बांद्रा-वर्ली सी लिंक मुंबई में

बेमिसाल
शिखर चंद जैन

अपने देश के अलग-अलग क्षेत्रों में निर्मित किए गए इंजीनियरिंग के ये नायाब नमूने हर किसी को हैरान कर देते हैं। ये गौरवशाली प्रतीक भारतीय इंजीनियरिंग की नई प्रगति का प्रतिनिधित्व करते हैं।

चिनाब रेलवे ब्रिज

जम्मू-कश्मीर के रियासी जिले में स्थित यह विश्व का सबसे ऊंचा रेलवे आर्च ब्रिज है। यह 359 मीटर ऊंचा है। अनूठा चिनाब ब्रिज पेरिस के एफिल टॉवर से भी 35 मीटर ऊंचा है। इसका निर्माण कोंकण रेलवे कॉर्पोरेशन और इंजीनियरिंग संस्थान आईआईएससी बेंगलुरु द्वारा किया गया है। आईआईटी दिल्ली और आईआईटी रुड़की ने इसकी भूकंप सहनशीलता का विश्लेषण किया, जबकि रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) ने इसके विस्फोट-प्रतिरोधी होने की पुष्टि की।

यह 8 तीव्रता तक के भूकंप के झटके, 40 टन टीएनटी तक का विस्फोट, -20 डिग्री सेल्सियस तक तापमान और 266 किमी. प्रति घंटा की गति वाली आंधी को सहन करने की क्षमता रखता है। दुनिया का सबसे ऊंचा रेलवे पुल माना जाने वाला चिनाब पुल, जम्मू और कश्मीर के रियासी जिले में बक्कल और कौरी के बीच स्थित है। यह उधमपुर, श्रीनगर, बारामुला रेलवे लिंक का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसका उद्देश्य जम्मू और कश्मीर को शेष भारत से जोड़ना है। इसके कारण क्षेत्र में कनेक्टिविटी काफी सुविधाजनक हो गई है।

स्टेच्यू ऑफ इक्वेलिटी

हैदराबाद (तेलंगाना) में स्थित यह विशाल प्रतिमा 11वीं शताब्दी के वैष्णव संत श्री रामानुजाचार्य की है। 5 फरवरी 2019 को, भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद

ने इस प्रतिमा का अनावरण किया। यह प्रतिमा समानता, न्याय और करुणा के उस दृष्टिकोण का प्रतीक है, जिसका उपदेश श्री रामानुजाचार्य ने मानवता को दिया था। स्टेच्यू ऑफ इक्वेलिटी की ऊंचाई 216 फीट है, जो संयुक्त राज्य अमेरिका में स्थित स्टेच्यू ऑफ लिबर्टी के बाद दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी प्रतिमा है। यह मूर्ति एक विशेष कांस्य मिश्र धातु से बनी है, जिसे पंच धातु कहा जाता है। इसमें श्री रामानुजाचार्य को बैठी हुई मुद्रा, कमल मुद्रा, पद्मासन और पारंपरिक मुद्रा में दर्शाया गया है, जो शांति और ध्यान दोनों का प्रतीक माना जाता है। यह प्रतिमा 54 फुट ऊंचे चबूतरे पर स्थापित है, जिस पर संग्रहालय और अनुसंधान केंद्र स्थित हैं। यह चबूतरा रामानुजाचार्य के संदेश के स्तंभों और आधुनिक विश्व में उनकी प्रासंगिकता का प्रतीक है। यह समाज में समानता और देश में एकता का प्रतीक भी है। इसके चारों ओर एक मंदिर परिसर और आगंतुकों के लिए एक उच्च-तकनीकी केंद्र है। यह प्रतिमा और परिसर इंजीनियरिंग के अद्भुत कौशल का प्रदर्शन करता है।

बांद्रा-वर्ली सी लिंक

मुंबई में रहने वाले बहुत से निवासी बांद्रा-वर्ली सी लिंक के जरिए यात्रा करते हैं। यह शानदार केबल-स्टेड ब्रिज भारत की आधुनिक इंजीनियरिंग विशेषज्ञता का एक अनुपम उदाहरण है। 5.6 किलोमीटर लंबा यह पुल बांद्रा और वर्ली के व्यस्त उपनगरों को जोड़ता है, जिससे शहर की भीड़-भाड़ वाली सड़कों पर सफर का समय कम हो जाता है। केबलों को थामे रखने वाले विशाल खंभे समुद्र तल से 128 मीटर ऊपर हैं। 66 फीट चौड़े इस ब्रिज पर आठ लेन में आवागमन होता है। वर्ष 2000 में इसका निर्माण शुरू हुआ और वर्ष 2010 में यह आम जनता के लिए खोल दिया गया।

पीर पंजाल अटल रेलवे सुरंग

वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स द्वारा '10,000 फीट से ऊपर दुनिया की सबसे लंबी राजमार्ग सुरंग' के रूप में दर्ज, अटल सुरंग हिमाचल प्रदेश में मनाली-लेह राजमार्ग पर रोहतांग दर्रे के नीचे स्थित है। चुनौतीपूर्ण भू-भाग और जमा देने वाले तापमान में निर्मित, 9.02 किलोमीटर लंबी इस सुरंग को रोहतांग सुरंग के नाम से भी जाना जाता है। इसका निर्माण सर्दियों के महीनों में राजमार्ग के बंद होने की समस्या को दूर करने के लिए किया गया है, जिससे लाहौल और स्पीति अलग-थलग पड़ जाते थे। सुरंग के निर्माण से मनाली-केलांग मार्ग की दूरी 46 किलोमीटर कम हो गई है, जिससे इस दूरी की यात्रा का समय लगभग चार से पांच

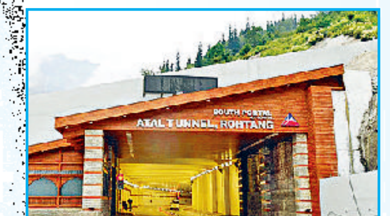

घंटे कम हो गया है। हिमालय में पीर पंजाल पर्वतमाला की चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों को देखते हुए, इस सुरंग के निर्माण के लिए उत्कृष्ट तकनीकी और इंजीनियरिंग कौशल का उपयोग किया गया। यह प्रभावशाली परियोजना आधुनिक सिविल इंजीनियरिंग में भारत की विशेषज्ञता का गौरव है और भारत के सर्वश्रेष्ठ सिविल इंजीनियरिंग चमत्कारों में से एक है। *

धीरूभाई अंबानी इंटरनेशनल स्कूल

मुंबई, महाराष्ट्र में स्थित यह एक प्रमुख अंतरराष्ट्रीय स्कूल है। यहां वर्षाजल का संचयन और ऊर्जा संरक्षण सहित समकालीन वास्तुकला सुविधाएं मौजूद हैं। डिजाइन से संबंधित आधुनिक विशेषताओं के लिए इसे सर्वश्रेष्ठ स्कूलों में से एक माना जाता है क्योंकि यह स्थिरता के बारे में बहुत कुछ कहता है। स्कूल ने हाल ही में अत्याधुनिक सुविधाओं को शामिल किया है, जिसमें सौर पैनल और जल पुनर्चक्रण प्रणालियों सहित एडवांस्ड ग्रीन टेक्नोलॉजी का उपयोग किया गया है। अत्याधुनिक कक्षाएं और इंटरेक्टिव शिक्षण वातावरण एक सुव्यवस्थित परिसर में जोड़े गए हैं, जो पर्यावरणीय जिम्मेदारी के साथ शिक्षा में उत्कृष्टता पर जोर देते हैं। इंजीनियर्स के योगदान से ही इसका निर्माण संभव हो पाया है।

तेलंगाना राज्य का प्रसिद्ध लोक-महोत्सव बतकम्मा, महिलाओं के सम्मान और प्रकृति से जुड़ाव का प्रतीक पर्व है। भाद्रपद अमावस्या से शुरू होकर दुर्गाष्टमी तक नौ दिनों तक मनाए जाने वाले इस उत्सव के दौरान कला, संस्कृति और प्रकृति के आपसी जुड़ाव की निराली छटा दिखती है।

स्त्री सम्मान-प्रकृति प्रेम का प्रतीक लोक-महोत्सव बतकम्मा

सांस्कृतिक पर्व
सरिता सुराणा

हमारे देश में वर्ष भर त्योहारों का मेला लगा रहता है। सभी क्षेत्र, जाति और धर्म के लोग उत्साह-उमंग से विभिन्न पर्व मनाते हैं। लेकिन अलग-अलग राज्यों में भी अपने-अपने कुछ विशेष त्योहार मनाए जाते हैं। उन्ही में से एक है बतकम्मा पर्व। इसे तेलंगाना राज्य की महिलाएं मनाती हैं।

वातावरण में लहराती हैं स्वर लहरियां

छिन्निमा बतकम्मा, छिन्नारक्का बतकम्मा,
दादी मां बतकम्मा, दामेरमुतक्कल बतकम्मा।

ऐसे गीतों की मधुर स्वर लहरियां जब वातावरण में गूंजने लगती हैं तो समझ आ जाता है कि बतकम्मा पर्व आ गया है और संपूर्ण तेलंगाना में मातृशक्ति के प्रति सम्मान और प्रकृति प्रेम का सैलाब उमड़ रहा है।

इस पर्व में एक प्रतीकात्मक पुष्पों की प्रतिमा बनाई जाती है, जिसे बनाने के लिए कई रंगों के फूलों का उपयोग किया जाता है। इसलिए इसे रंगों का त्योहार भी माना जाता है। पूरे तेलंगाना में यह बतकम्मा पर्व नौ दिनों तक मनाया जाता है। इसमें बहुत सुंदर तरीके से फूलों से अलग-अलग आकृतियां बनाई जाती हैं, इसमें प्रयोग किए जाने वाले ज्यादातर फूल आयुर्वेदिक दृष्टि से भी उपयोगी होते हैं। इसमें फूलों से सात परतों से मंदिर के गोपुरम जैसी आकृति बनाई जाती है। तेलुगु भाषा में बतकम्मा का मतलब होता है, देवी मां जिंदा हैं। इस दिन बतकम्मा को महागौरी के रूप में पूजा जाता है, यह पर्व स्त्रियों के सम्मान के रूप में मनाया जाता है।

कब मनाया जाता हैः हिंदू पंचांग के अनुसार यह पर्व श्राद्ध पक्ष, भादो की अमावस्या, जिसे महालय अमावस्या भी कहते हैं, के दिन शुरू होता है और नवरात्र की अष्टमी के दिन खत्म होता है। ग्रेगोरियन कैलेंडर के अनुसार यह सितंबर-अक्टूबर महीने में मनाया जाता है। इस वर्ष यह पर्व 21 से 30 सितंबर तक मनाया जाएगा। यह मानसून के अंत में शुरू होकर शीत ऋतु के प्रारंभ तक मनाया जाता है।

ऐसे मनाते हैं पर्वः इस पर्व में फूलों से एक बड़े पर्वत जैसी आकृति बनाई जाती है। इसके सबसे ऊपरी भाग में हल्दी से गौरम्मा बनाकर उसे रखा जाता है। इस दौरान नाच-गाने का आयोजन किया जाता है। बतकम्मा का नाम बृहदाम्मा से ही उत्पन्न हुआ है। माना जाता है कि भगवान शिव-पार्वती को प्रसन्न करने के लिए यह त्योहार 1000 साल से उसी इलाके (वर्तमान तेलंगाना) में बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है।

जताते हैं प्रकृति के प्रति आभारः वर्षा ऋतु में सभी जगह पानी का प्रवाह होता है। नदी, तालाब एवं कुएं पानी से भर जाते हैं। उसके बाद धरती पर फूलों के रूप में पर्यावरण में बहार आ जाती है। इसी कारण प्रकृति का धन्यवाद देने के लिए तरह-तरह के फूलों के साथ इस पर्व को मनाया जाता है। इस त्योहार को मनाने के लिए नव विवाहिताएं अपने मायके भी आती हैं। मान्यता है कि उनके जीवन में परिवर्तन लाने के लिए यह प्रथा शुरू की गई थी।

पर्व के शुरुआती पांच दिनों में महिलाएं अपने घर का आंगन स्वच्छ करती हैं और उसको गोबर से लीपा जाता है। सुबह जल्दी उठ कर उस आंगन में सुंदर-सुंदर मुग्गु बनाती हैं। कई जगह पर ऐप्पन से चौक बनाया जाता है, जिसमें सुंदर कलाकृति बनाई जाती है। चावल के आटे से बनी रंगोली का भी बहुत महत्त्व है। इस उत्सव में घर के पुरुष बाहर से नाना प्रकार के फूल एकत्र करते हैं, जिसमें सलोसिया, सेन्ना, मेरीगोल्ड, कमल, ककुर्बिता, कुकुमिस और बहुत से अन्य फूलों को एकत्रित किया जाता है। फूलों की तरह-तरह की परतें बनाई जाती हैं, उनके नीचे फूलों की पत्तियों से सजाया जाता है, इसे थंबलम के नाम से जाना जाता है। नौ दिन तक हर शाम महिलाएं और लड़कियां एकत्रित होकर नाचती, गाती हैं, ढोल बजाए जाते हैं। सब अपने-अपने बतकम्मा को लेकर आती हैं। इस दौरान महिलाएं पारंपरिक साड़ी, गहने पहनती हैं और लड़कियां लहंगा चोली पहनती हैं। सभी महिलाएं बतकम्मा के चारों ओर गोला बनाकर क्षेत्रीय भाषा में गीत गाती हैं। महिलाएं अपने परिवार की सुख-समृद्धि और खुशहाली के लिए माता पार्वती से प्रार्थना करती हैं। अष्टमी पूजा के बाद बतकम्मा को तालाब के पानी में विसर्जित कर दिया जाता है। *

किसी भी ग्रह से टूटकर पृथ्वी पर गिरे उल्कापिंड उस ग्रह के इतिहास और उसकी संरचना को समझने में मदद करते हैं। इसका उपयोग गहनों एवं सजावटी वस्तुओं में भी किया जाता है। यही वजह है कि ग्रहों के इन टुकड़ों की कीमत बहुत अधिक होती है। जानिए इस बारे में विस्तार से।

महत्वपूर्ण और कीमती होते हैं ग्रहों से टूटकर गिरे उल्कापिंड

रोचक
अंजू जैन

हाल ही में मंगल ग्रह से आए एक उल्कापिंड, NWA 16788, की न्यूयॉर्क में 'गीक वीक 2025' नीलामी हुई है। यह उल्कापिंड पृथ्वी पर पाया गया अब तक का सबसे बड़ा मंगल ग्रह का टुकड़ा माना जाता है, जिसका वजन 24.5 किलोग्राम है। इसकी अनुमानित कीमत 15 से 30 करोड़ रुपए (लगभग 1.8 से 3.6 मिलियन अमेरिकी डॉलर) के बीच है।

क्या है NWA 16788: यह एक शर्गोटाइट उल्कापिंड है, जो मंगल ग्रह की भूगर्भीय संरचना के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी देता है। यह सहारा रेगिस्तान में पाया गया था और मंगल ग्रह की सतह से उत्पन्न हुआ माना जाता है। इसकी सतह पर लाल-भूरी फ्यूजन क्रस्ट है, जो अंतरिक्ष में इसकी यात्रा के दौरान उच्च तापमान के कारण बनी। यह मंगल ग्रह की मिट्टी से बना है और इसकी उम्र लगभग 74.2 करोड़ साल पुरानी बताई जाती है।

वैज्ञानिक महत्वः यह उल्कापिंड मंगल ग्रह के इतिहास और संरचना को समझने में मदद करता है। वैज्ञानिकों का मानना है कि यह उस समय के मंगल ग्रह की सतह का हिस्सा हो सकता है, जब वहां पानी मौजूद था।

मूल्य और विशेषताः इसकी कीमत 15 से 30 करोड़ रुपए के बीच अनुमानित है, जो इसे अब तक के सबसे महंगे उल्कापिंडों में से एक बनाता है।

क्यों होते हैं इतने महंगेः ग्रहों या उल्काओं से टूट कर पृथ्वी पर गिरे टुकड़े, जिन्हें उल्कापिंड कहा जाता है, कई कारणों से महंगे होते हैं। इनमें शामिल हैं-

दुर्लभताः उल्कापिंड अंतरिक्ष से पृथ्वी पर बहुत कम मात्रा में पहुंचते हैं। इनमें से कुछ विशेष प्रकार, जैसे चंद्रमा या मंगल ग्रह से आए उल्कापिंड, अत्यंत दुर्लभ होते हैं, जिससे उनकी कीमत बढ़ जाती है।

वैज्ञानिक महत्वः उल्कापिंड ग्रहों की उत्पत्ति के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करते हैं। वैज्ञानिक इनका अध्ययन ग्रहों की भौतिक-रासायनिक संरचना और प्राचीन इतिहास को समझने के लिए करते हैं, जिससे इनकी मांग बढ़ती है।

सौंदर्य और संग्रहणीयताः कुछ उल्कापिंडों में अनोखे पैटर्न (जैसे विडमैनस्टेटेन पैटर्न) या रंग होते हैं, इस कारण इनका उपयोग गहनों या सजावटी वस्तुओं के निर्माण में भी किया जाता है।

उत्पत्तिः चंद्रमा, मंगल या विशिष्ट क्षुद्रग्रहों से आए उल्कापिंड अत्यंत मूल्यवान होते हैं, क्योंकि ये पृथ्वी के बाहर की सामग्री होते हैं। उल्कापिंडों को खोजने, पुनर्प्राप्त करने और उनकी प्रामाणिकता सत्यापित करने में समय, संसाधन और विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है।

सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्वः कुछ संस्कृतियों में उल्कापिंडों को पवित्र माना जाता है, जैसे भारत में कुछ प्राचीन मंदिरों में रखे गए उल्कापिंड।

ग्रहों के टुकड़ों के प्रकारः ग्रहों से टूट कर पृथ्वी पर गिरे टुकड़ों के कई प्रकार होते हैं, जैसे-

उल्का पिंडः जब उल्का पृथ्वी के वायुमंडल से गुजर कर सतह पर पहुंचती है, तो उसे उल्कापिंड कहते हैं।

उल्काः अंतरिक्ष से पृथ्वी की ओर आने वाला पदार्थ जो वायुमंडल में जलता है और 'टूटता तारा' जैसा दिखता है।

क्षुद्रग्रहः अंतरिक्ष में चक्कर लगाने वाले बड़े चट्टानी पदार्थ, जिनके टुकड़े उल्कापिंड के रूप में पृथ्वी पर गिर सकते हैं।

चंद्र उल्का पिंडः चंद्रमा से उत्पन्न होने वाले उल्का पिंड।

मंगल उल्का पिंडः मंगल ग्रह से आए उल्कापिंड।

पैलासाइटः लोहे और सिलिकेट खनिजों से बने विशेष उल्का पिंड, जो अकसर सुंदर क्रिस्टल पैटर्न दिखाते हैं।

कोन्ड्राइटः सबसे आम उल्कापिंड, जिनमें सौरमंडल की प्राचीन सामग्री होती है।

इनके अलावा भी विभिन्न ग्रहों से टूटकर गिरे टुकड़ों या उल्कापिंडों के अलग-अलग कई प्रकार एवं अलग-अलग नाम होते हैं।

अब हम आपको अब तक मिले कुछ बेहद महत्वपूर्ण उल्कापिंड और उनकी कीमत के बारे में बताते हैं।

होबा उल्कापिंडः नामीबिया में 1920 ई. में पाया गया लगभग 60 टन वजनी यह उल्कापिंड अब तक का ज्ञात सबसे बड़ा एकल उल्कापिंड है। इसका बाजार मूल्य निर्धारित नहीं है, क्योंकि यह वहां की राष्ट्रीय संपत्ति है, लेकिन इसकी कीमत अरबों रुपए हो सकती है।

फुकांग पैलासाइटः साल 2000 में चीन में पाया गया यह उल्का पिंड पैलासाइट (लोहा और ओलिवाइन क्रिस्टल) कैटेगरी का है। यह अपने सुंदर क्रिस्टल पैटर्न के लिए प्रसिद्ध है। इस उल्कापिंड के इसके छोटे टुकड़ों की कीमत 20 से 50 डॉलर प्रति ग्राम तक हो सकती है।

चेल्याबिंस्क उल्कापिंडः साल 2013 में रूस में गिरा साधारण कोन्ड्राइट प्रकार का यह उल्का पिंड एक खास वजह से प्रसिद्ध है। दरअसल, 2013 में इसके गिरने से एक बड़ा विस्फोट हुआ था, जिसने इसे विश्व प्रसिद्ध बनाया। इसके टुकड़ों की कीमत 1 से 10 डॉलर प्रति ग्राम तक रही है।

नखला उल्कापिंडः मिस्र में साल 1911 में गिरा यह उल्कापिंड मंगल ग्रह से गिरे होने की पुष्टि वाला पहला उल्कापिंड है। इसकी कीमत प्रति ग्राम 100 से 300 डॉलर तक तक हो सकती है।

एलेंडे उल्कापिंडः मैक्सिको में 1969 ई. में गिरे कार्बोनेशियस कोन्ड्राइट प्रकार के इस उल्कापिंड में सौरमंडल की सबसे प्राचीन सामग्री और कार्बनिक यौगिक पाए गए हैं, जो जीवन की उत्पत्ति के अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण हैं। इसकी कीमत प्रति ग्राम 1 से 5 डॉलर अनुमानित है। लेकिन इसके दुर्लभ टुकड़ों की कीमत अधिक हो सकती है। *

बॉलीवुड फिल्मों की बात करें तो शुरुआत से लेकर अब तक की फिल्मी संवाद की भाषा हिंदी में अनेक परिवर्तन देखने को मिलते हैं। हर अदाकार अपने अंदाज में हिंदी तो बोलता ही है, समय और पीढ़ी के अनुसार भी इसमें बदलाव आते रहे हैं। इन बदलावों पर एक नजर।

पहले के दौर से कितनी बदली बॉलीवुड फिल्मों की हिंदी

सिने संवाद
डी.जे. नंदन

अगर आप हिंदी फिल्मों के शौकीन हैं तो बॉलीवुड फिल्मों में बोली जाने वाली आज की हिंदी में पिछली सदी के पचास, साठ, सत्तर और अस्सी के दशकों की बॉलीवुड फिल्मों में बोली जाने वाली हिंदी से कुछ अंतर महसूस करते होंगे। क्या फर्क है तब और अब की फिल्मों की हिंदी में, एक दृष्टि डालते हैं।

बीते दौर की बॉलीवुड फिल्मों में हिंदीः पिछली सदी के सत्तर और अस्सी के दशक के एक्टर्स की बात करें तो अमिताभ बच्चन की हिंदी बहुत समृद्ध थी, साथ ही उसमें हमेशा 'संवाद अदायगी' का एक मंचीय असर दिखता था। उनसे पूर्व दिलीप कुमार के संवाद इतने अधिक अभिनय केंद्रित हुआ करते थे कि दर्शक डायलॉग्स को सुनने की बजाय देखने लगता था। दिलीप

'उधम सिंह' में विक्की कौशल

कुमार के संवादों में हिंदी-उर्दू मिश्रित भाषा देखने को मिलती है।

ऐसे ही अभिनेता राजकुमार की संवाद अदायगी में उर्दू-शैली का असर दिखता था, जो उनकी अभिजातीय छवि का हिस्सा बनता था। उदाहरण के तौर पर फिल्म 'पाकीजा' में उनकी संवाद अदायगी को देखा जा सकता है। अपने जमाने में राजेश खन्ना या शत्रुघ्न सिन्हा जैसे अभिनेता अकसर अपने मूल क्षेत्रीय लहजों को पूरी तरह छोड़े बिना हिंदी बोलते थे। यह उस दौर में 'स्वाभाविक' ही माना जाता था।

अपने दौर की बेहतरीन अभिनेत्री स्मिता पाटिल भाषा को साधने में माहिर थीं। वह बहुत अच्छी हिंदी बोलती थीं। उनके द्वारा बोले गए संवाद बहुत गूंजदार, ठहराव से भरे होते थे। उनके

'राजी' में आलिया भट्ट के संवाद रहे असरदार

क्षेत्रीय प्रभाव से मुक्त हैं 'गुड लक जेरी' के संवाद

संवादों में लयात्मकता होती थी और इसमें कविताई का आभास होता था। समग्रता में देखा जाए तो पिछली सदी के 70 और 80 के दशक में अभिनेता हिंदी को एक खास छंद, ठहराव और 'दबाव' के साथ बोलते थे। यह एक 'शास्त्रीय लहजा' था, जो दिलीप कुमार, अमिताभ बच्चन, शबाना आजमी, स्मिता पाटिल आदि कलाकारों की संवाद अदायगी में दिखता था।

आज के फिल्मों की हिंदीः हर दौर की अपनी एक अलग भाषा, संवाद का एक अलग सलीका होता है। यह बात हिंदी फिल्मों पर भी लागू होती है। आज की फिल्मों की हिंदी पहले की फिल्मों से बेहतर भले न हो, यह पहले की तुलना में अलग जरूर है और असरदार भी। आज फिल्मों में बोली जाने वाली हिंदी ज्यादा लचीली, संवादधर्मी और ग्लोबल शहरी अनुभव से जुड़ी है। यह किसी खास उच्चारण और लहजे में नहीं बोली जाती बल्कि यह हमारे-आपके जैसे सामान्य लोगों की तरह ही बोली जाती है।

हिंदी बोलने में दिखता है आत्मविश्वासः आज की पीढ़ी के अभिनेता और अभिनेत्रियां हिंदी को पूरे आत्मविश्वास से बोलते हैं। उदाहरण के तौर पर फिल्म 'सरदार उधम सिंह' के संवाद 'जो लहू नहीं खौला, वो लहू नहीं...' को देखा जा सकता है। फिल्म में विक्की कौशल पूरे आत्मविश्वास और गहराई के साथ हिंदी बोलते हैं। न संवादों में कोई बनावट, न हिचक। फिल्म के संवादों के उच्चारण में हिंदी की शुद्धता भले गायब हो, लेकिन हिंदी के लिए गर्व और सहजता यहां साफ देखा जा सकता है।

दिखता है सहज भाषाई प्रवाहः आज की बॉलीवुड फिल्मों में सहज भाषाई प्रवाह दिखता है। इसका एक खूबसूरत उदाहरण आलिया भट्ट की फिल्म 'राजी' है। इस फिल्म में

भाषा को साधने में माहिर थीं स्मिता पाटिल

एक कश्मीरी लड़की की भूमिका निभाते हुए आलिया ने जिस तरह की हिंदी बोली है, उसमें पानी जैसा बहाव है। कोई भी शब्द या संवाद अतिरिक्त जोर देकर नहीं बोला गया था, फिर भी ये असरदार थे।

क्षेत्रीय प्रभाव से मुक्त हिंदीः आज के दौर की फिल्मों में बोली जाने वाली हिंदी की एक और खास बात यह है कि आज के ज्यादातर अभिनेताओं और अभिनेत्रियों का उच्चारण और लहजा क्षेत्रीयता से मुक्त है। उदाहरण के तौर पर जान्हवी कपूर की 'गुड लक जेरी' को देखा जा सकता है। फिल्म में जान्हवी को बिहारी-पंजाबी पृष्ठभूमि का दिखाया गया है, फिर भी उनका उच्चारण क्षेत्रीयता से मुक्त 'न्यूट्रल शहरी हिंदी' जैसा है।

कैजुअल फ्लुएंसी पर जोरः आज के अभिनेताओं को मंचीय प्रशिक्षण, स्क्रिप्ट वर्कशॉप्स और संवाद को स्वाभाविक बनाने की ट्रेनिंग मिलती है। आज के दौर में संवाद अदायगी की नाटकीय शैली के स्थान पर रोजमर्रा की जिंदगी में बोली जाने वाली हिंदी और इसकी कैजुअल फ्लुएंसी पर जोर दिया जाता है। विक्की कौशल, राजकुमार राव, तापसी पन्नू, भूमि पेडनेकर, ये सभी संवादों में हिंदी को आत्मसात करके बोलते हैं। ये हिंदी को 'परफॉर्म' नहीं करते, बल्कि 'जीते' हैं।

कुल मिलाकर, फिल्मों में आज की पीढ़ी की हिंदी ज्यादा कैजुअल, लचीली और वास्तविक जिंदगी से जुड़ी लगती है। पहले के फिल्मों की हिंदी भाषा में 'भाषाई सौंदर्य' था, आज के फिल्मों की हिंदी में 'संवादिक सहजता' है। *